Vighnaharta Lord Ganesha will remove all obstacles, and bless us all.

The 3-dimensional aspects of

Marriage Matching

through the mirror of Astrology.

HEALTH & HARMONY
PEACE & SATISFACTION
PROSPERITY & ENJOYMENT

रिपोर्ट आई. डी. : **MM-126/127**
रिपोर्ट दिन / समय : **13/01/2021 (17:09:14)**

Partner 1

Sample B

जन्म तारीख :	17 / 18:01:1975(शुक / शनि)
जन्म समय :	01:45:00
जन्म स्थान :	Gurgaon (INDIA)
चन्द्र राशि :	मीन
राशिपति :	गुरू
नक्षत्र :	पूर्वाभाद्रपद (4)

Partner 2

Sample G

जन्म तारीख :	01 / 02:11:1976(सोम / मंगल)
जन्म समय :	06:09:45
जन्म स्थान :	New Delhi (INDIA)
चन्द्र राशि :	कुम्भ
राशिपति :	शनि
नक्षत्र :	पूर्वाभाद्रपद (1)

MindSutra Software Technologies

MindSutra Software Technologies

A-16, Ramdutt Enclave

Milap Nagar, Uttam Nagar

New Delhi -59

9818193410

Sample B	नाम	Sample G
	दादा का नाम	
	पिता का नाम	
	माता का नाम	
	गोत्र	
पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
17-18/01/1975	जन्म तिथि	01-02/11/1976
शुक्रवार–शनिवार	जन्म दिन	सोमवार–मंगलवार
01:45:00	जन्म समय	06:09:45
46:07:11	जन्म समय (घटी)	58:55:53
INDIA	देश	INDIA
Gurgaon	स्थान	New Delhi
028:28:00 उत्तर	अक्षांश	028:39:00 उत्तर
077:02:00 पूर्व	रेखांश	077:13:00 पूर्व
-00:21:52 hrs	स्थानिक समय संस्कार	-00:21:08 hrs
00:00:00	युद्ध / ग्रीष्म समय संस्कार	00:00:00
01:23:08	स्थानिक समय	05:48:37
07:17:59	सूर्योदय	06:36:31
17:46:27	सूर्यास्त	17:32:37
N.C.Lahiri (023:30:31)	अयनांश	N.C.Lahiri (023:30:31)
तुला	लग्न	तुला
शुक्र	लग्नाधिपति	शुक्र
मीन	राशि	कुम्भ
गुरू	राशि स्वामी	शनि
पूर्वाभाद्रपद (25)	नक्षत्र	पूर्वाभाद्रपद (25)
4	चरण	1
गुरू	नक्षत्र स्वामी	गुरू
परिध	योग	ध्रुव
बल्लव	करण	विष्टी
मकर	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	वृश्चिक
दिवाकर – दि	जन्म नामाक्षर	शे, से – शेफाली

MindSutra Software Technologies

शुभाशुभ ज्ञान

	Sample B	Sample G
लग्न	: तुला	तुला
मूलांक	: 9	2
भाग्यांक	: 5	9
मित्रांक	: 3, 9	3, 6
शत्रु अंक	: 2, 4	1, 7
शुभ वर्ष	: 18, 21, 23, 27, 30, 32, 36, 39	18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39
शुभ दिन	: शनिवार, बुधवार, शुक्रवार	शनिवार, बुधवार, शुक्रवार
शुभ ग्रह	: शनि, बुध, शुक्र	शनि, बुध, शुक्र
अशुभ ग्रह	: मंगल, गुरू	मंगल, गुरू
मित्र राशि	: शुक्र, बुध	गुरू, सूर्य
मित्र लग्न	: मकर, मेष, मिथुन, सिंह	मकर, मेष, मिथुन, सिंह
शुभ रत्न	: हीरा	हीरा
शुभ उपरत्न	: तुंक, हीरा, कसला, सिम्मा	तुंक, हीरा, कसला, सिम्मा
भाग्य रत्न	: पन्ना	पन्ना
अनुकूल देवता	: लक्ष्मी	लक्ष्मी
शुभ धातु	: रजत	रजत
शुभ रंग	: श्वेत	श्वेत
दिशा	: दक्षिणपूर्व	दक्षिणपूर्व
समय	: सूर्योदय	सूर्योदय
पदार्थ	: मिसरी, सुगंधी, दही, श्वेतचन्दन	मिसरी, सुगंधी, दही, श्वेतचन्दन
अन्न	: चावल	चावल
द्रव्य	: दूध	दूध

ग्रह स्थिति और कुण्डली

Sample B DOB-18:01:1975 TOB-01:45:00 POB-Gurgaon

ग्रह	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
चाल								(व)	(व)	(व)
अंश	17:50:28	03:35:14	02:36:32	03:36:51	20:36:14	22:53:23	20:58:47	20:58:52	15:25:35	15:25:35
राशि	तुला	मकर	मीन	धनु	मकर	कुम्भ	मकर	मिथुन	वृश्चिक	वृष
राशिपति	शुक्र	शनि	गुरू	गुरू	शनि	शनि	शनि	बुध	मंगल	शुक्र
नक्षत्र	स्वाति	उत्तराषाढ़	पूर्वाभाद्रपद	मूल	श्रवण	पूर्वाभाद्रपद	श्रवण	पुनर्वसु	अनुराधा	रोहिणी
नक्षत्र चरन	4	3	4	2	4	1	4	1	4	2
नक्षत्र संख्या	15	21	25	19	22	25	22	7	17	4
नक्षत्रपति	राहु	सूर्य	गुरू	केतु	चन्द्र	गुरू	चन्द्र	गुरू	शनि	चन्द्र
गति		01:01:06	11:54:16	00:43:40	01:28:01	00:11:51	01:15:06	00:04:47	00:05:53	00:05:53
नवांश	मीन	कुम्भ	कर्क	वृष	कर्क	मेष	कर्क	मेष	वृश्चिक	वृष
नवांशपति	गुरू	शनि	चन्द्र	शुक्र	चन्द्र	मंगल	चन्द्र	मंगल	मंगल	शुक्र
स्थिति		स्व नक्षत्र	स्व नवांश	मित्र राशि	सम राशि	स्व नक्षत्र	मित्र राशि	मित्र राशि	नीच राशि	नीच राशि

लग्न कुण्डली

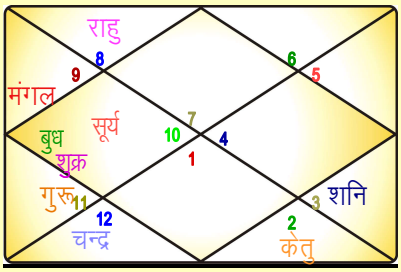

चन्द्र कुण्डली

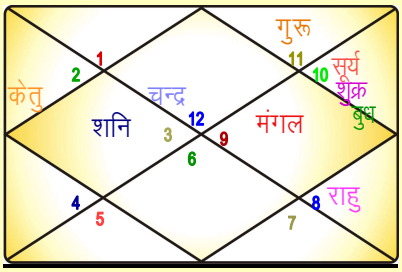

भाव चलित कुण्डली

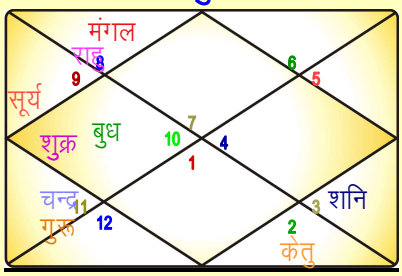

Sample G DOB-02:11:1976 TOB-06:09:45 POB-New Delhi

ग्रह	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
चाल				अ.	अ.	(व)				
राशि	तुला	तुला	कुम्भ	तुला	तुला	वृष	वृश्चिक	कर्क	तुला	मेष
अंश	10:10:33	16:11:22	22:18:14	23:04:38	12:48:52	04:44:28	21:26:00	22:43:39	10:01:15	10:01:15
राशिपति	शुक्र	शुक्र	शनि	शुक्र	शुक्र	शुक्र	मंगल	चन्द्र	शुक्र	मंगल
नक्षत्र	स्वाति	स्वाति	पूर्वाभाद्रपद	विशाखा	स्वाति	कृतिका	ज्येष्ठा	आश्लेषा	स्वाति	अश्विनी
नक्षत्र चरन	2	3	1	1	2	3	2	2	2	4
नक्षत्र संख्या	15	15	25	16	15	3	18	9	15	1
नक्षत्रपति	राहु	राहु	गुरू	गुरू	राहु	सूर्य	बुध	बुध	राहु	केतु
गति		01:00:04	12:12:11	00:41:51	01:38:54	00:07:23	01:12:50	00:02:49	00:00:44	00:00:44
नवांश	मकर	कुम्भ	मेष	मेष	मकर	कुम्भ	मकर	मकर	मकर	कर्क
नवांशपति	शनि	शनि	मंगल	मंगल	शनि	शनि	शनि	शनि	शनि	चन्द्र
स्थिति		नीच राशि	सम राशि	स्व नवांश	मित्र राशि	शत्रु राशि	सम राशि	स्व नवांश	स्व नक्षत्र	स्व नक्षत्र

लग्न कुण्डली

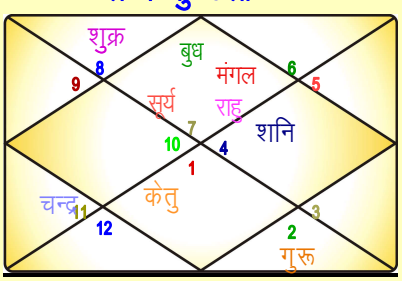

चन्द्र कुण्डली

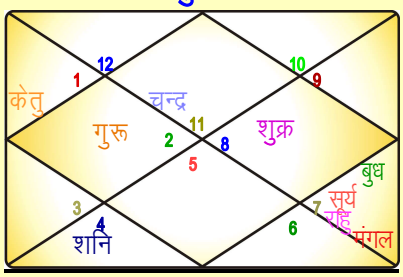

भाव चलित कुण्डली

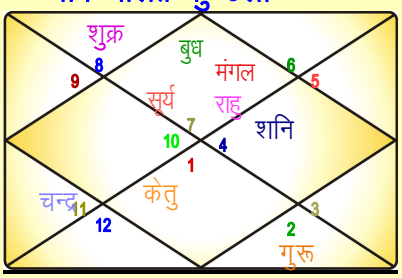

ग्रह स्थिति और विंशोत्तरी दशा

Sample B

भोग्य दशा काल

गुरू

0 वर्ष 10 मास 13 दिन

वर्तमान दशा

शुक्र – 20 वर्ष

01/12/2018 से

01/12/2038 तक

शुक्र	02/04/2022
सूर्य	02/04/2023
चन्द्र	01/12/2024
मंगल	31/01/2026
राहु	31/01/2029
गुरू	01/10/2031
शनि	01/12/2034
बुध	01/10/2037
केतु	01/12/2038

अंश	राशि		ग्रह		राशि	अंश
17:50:28	तुला		लग्न		तुला	10:10:33
03:35:14	मकर		सूर्य		तुला	16:11:22
02:36:32	मीन		चन्द्र		कुम्भ	22:18:14
03:36:51	धनु		मंगल		तुला	23:04:38
20:36:14	मकर		बुध		तुला	12:48:52
22:53:23	कुम्भ		गुरू	व	वृष	04:44:28
20:58:47	मकर		शुक्र		वृश्चिक	21:26:00
20:58:52	मिथुन	व	शनि		कर्क	22:43:39
15:25:35	वृश्चिक	व	राहु		तुला	10:01:15
15:25:35	वृष	व	केतु		मेष	10:01:15
08:47:23	तुला		हर्षल		तुला	14:05:05
17:26:49	वृश्चिक		नेपच्यून		वृश्चिक	18:56:10
15:43:56	कन्या	व	प्लूटो		कन्या	19:08:06

Sample G

भोग्य दशा काल

गुरू

13 वर्ष 2 मास 25 दिन

वर्तमान दशा

बुध – 17 वर्ष

27/01/2009 से

27/01/2026 तक

बुध	25/06/2011
केतु	21/06/2012
शुक्र	22/04/2015
सूर्य	26/02/2016
चन्द्र	28/07/2017
मंगल	25/07/2018
राहु	11/02/2021
गुरू	19/05/2023
शनि	27/01/2026

Sample B

लग्न कुण्डली

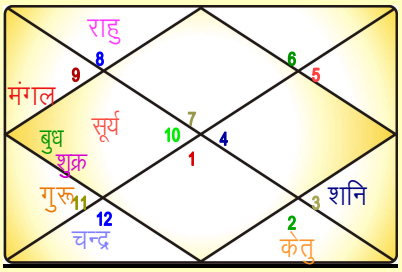

चन्द्र कुण्डली

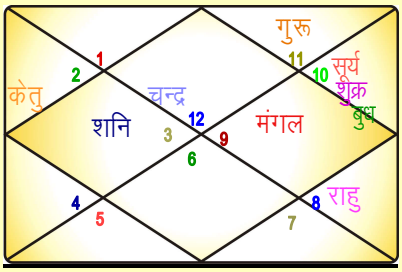

भाव चलित कुण्डली

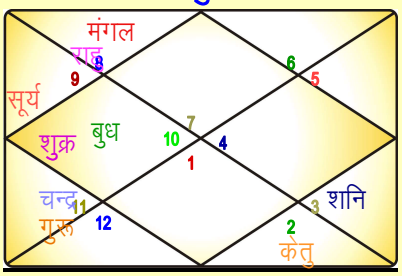

Sample G

लग्न कुण्डली

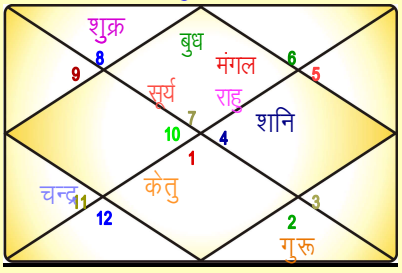

चन्द्र कुण्डली

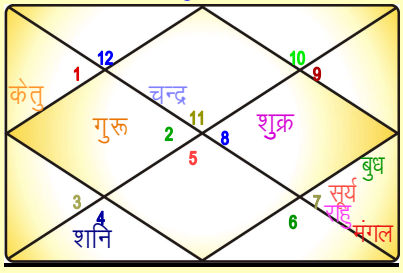

भाव चलित कुण्डली

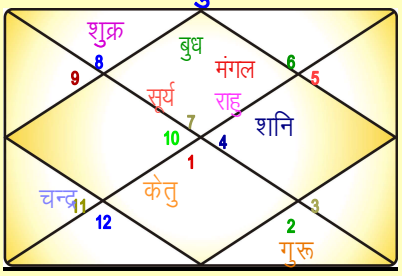

ग्रह अवस्था और तारा चक्र

ग्रह	Sample B					Sample G				
	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
सूर्य	सुप्त	मृत	क्षुदित	दुःखित	दीन	सुप्त	युवा	लज्जित	दुःखित	—
चन्द्र	स्वप्न	मृत	तृषित	प्रमुदित	मुदित	सुप्त	वृद्ध	क्षुदित	दुःखित	शान्त
मंगल	जाग्रत	बाल	गर्वित	प्रमुदित	मुदित	स्वप्न	वृद्ध	क्षुदित	दीन	मुदित
बुध	स्वप्न	कुमार	मुदित	शान्त	शान्त	स्वप्न	युवा	लज्जित	प्रमुदित	मुदित
गुरू	स्वप्न	वृद्ध	—	दीन	शान्त	स्वप्न	मृत	क्षुदित	दीन	वक्र
शुक्र	स्वप्न	कुमार	क्षुदित	शान्त	—	स्वप्न	कुमार	—	दीन	मुदित
शनि	स्वप्न	वृद्ध	क्षुदित	दीन	वक्र	स्वप्न	कुमार	—	दीन	शान्त
राहु	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुःखित	वक्र	स्वप्न	वृद्ध	लज्जित	प्रमुदित	मुदित
केतु	स्वप्न	युवा	मुदित	शान्त	शान्त	स्वप्न	वृद्ध	क्षुदित	शान्त	—

सन्नड़ि

जन्म	पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद
कर्म	पुनर्वसु	पुनर्वसु
संघातिक	हस्त	हस्त
समुद्य	स्वाति	स्वाति
विनाश	पूर्वाषाढ़	पूर्वाषाढ़
मानस	श्रवण	श्रवण

स्थुन

कंटक स्थुन	धनिष्ठा	पुर्वफाल्गुनी
कुज स्थुन	मूल	हस्त
रक्त स्थुन	आर्द्रा	स्वाति

त्रि–नाड़ि

जाति	श्रवण	श्रवण
देश	धनिष्ठा	धनिष्ठा
प्रतिष्ठा	शतभिषा	शतभिषा

नव–तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	खेष्म	प्रत्यरी	साधक	निधन	मित्र	अति मित्र
पूर्वाभाद्रपद	उत्तरभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पुर्वफाल्गुनी	उत्तरफाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़	उत्तराषाढ़	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

नव–तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	खेष्म	प्रत्यरी	साधक	निधन	मित्र	अति मित्र
पूर्वाभाद्रपद	उत्तरभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पुर्वफाल्गुनी	उत्तरफाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़	उत्तराषाढ़	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

आर्कचतुष्टय और नवशुभ अर्क

जन्म	पूर्वाभाद्र	पूर्वाषाढ़
कर्म	पुनर्वसु	विशाखा
आधान	विशाखा	पुनर्वसु
नैधव	पूर्वाषाढ़	पूर्वाभाद्र

आर्कचतुष्टय की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (28 नक्षत्रों के आधार पर)।

दग्ध	उत्तराषाढ़	स्वाति
क्षय	पूर्वाभाद्रपद	मूल
शूल	अश्विनी	श्रवण
सन्निपात	पुनर्वसु	अश्विनी
ध्वज	पुर्वफाल्गुनी	मृगशिरा
उल्का	चित्रा	पुष्य
भुकम्प	स्वाति	आश्लेषा
वज्रक	विशाखा	मघा
निर्घात	अनुराधा	पुर्वफाल्गुनी

नवशुभ अर्क की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (27 नक्षत्रों के आधार पर)।

Left Colum of every table is for partner1 (Boy) and right is for Partner2 (Girl)

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा (गुरू : 0 व 10 मा 13 दि)

ग्रह दशा	अवधि	------ तक
गुरू	0 y.10 m.13 d.	01:12:1975
शनि	19 y.0 m.0 d.	01:12:1994
बुध	17 y.0 m.0 d.	01:12:2011
केतु	7 y.0 m.0 d.	01:12:2018
शुक्र	20 y.0 m.0 d.	01:12:2038
सूर्य	6 y.0 m.0 d.	01:12:2044
चन्द्र	10 y.0 m.0 d.	01:12:2054
मंगल	7 y.0 m.0 d.	01:12:2061
राहु	18 y.0 m.0 d.	01:12:2079

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से --- तक
गुरू	
शनि	
बुध	
केतु	
शुक्र	
सूर्य	
चन्द्र	
मंगल	
राहु	18:01:1975 - 30:11:1975

शनि दशा

अन्तर्दशा	से --- तक
शनि	01:12:1975 - 03:12:1978
बुध	04:12:1978 - 12:08:1981
केतु	13:08:1981 - 21:09:1982
शुक्र	22:09:1982 - 21:11:1985
सूर्य	22:11:1985 - 02:11:1986
चन्द्र	03:11:1986 - 03:06:1988
मंगल	04:06:1988 - 13:07:1989
राहु	14:07:1989 - 19:05:1992
गुरू	20:05:1992 - 30:11:1994

बुध दशा

अन्तर्दशा	से --- तक
बुध	01:12:1994 - 28:04:1997
केतु	29:04:1997 - 25:04:1998
शुक्र	26:04:1998 - 23:02:2001
सूर्य	24:02:2001 - 30:12:2001
चन्द्र	31:12:2001 - 31:05:2003
मंगल	01:06:2003 - 28:05:2004
राहु	29:05:2004 - 15:12:2006
गुरू	16:12:2006 - 22:03:2009
शनि	23:03:2009 - 30:11:2011

केतु दशा

अन्तर्दशा	से --- तक
केतु	01:12:2011 - 27:04:2012
शुक्र	28:04:2012 - 28:06:2013
सूर्य	29:06:2013 - 02:11:2013
चन्द्र	03:11:2013 - 03:06:2014
मंगल	04:06:2014 - 30:10:2014
राहु	31:10:2014 - 18:11:2015
गुरू	19:11:2015 - 24:10:2016
शनि	25:10:2016 - 03:12:2017
बुध	04:12:2017 - 30:11:2018

भोग्य दशा (गुरू : 13 व 2 मा 25 दि)

ग्रह दशा	अवधि	------ तक
गुरू	13 y.2 m.25 d.	27:01:1990
शनि	19 y.0 m.0 d.	27:01:2009
बुध	17 y.0 m.0 d.	27:01:2026
केतु	7 y.0 m.0 d.	27:01:2033
शुक्र	20 y.0 m.0 d.	27:01:2053
सूर्य	6 y.0 m.0 d.	27:01:2059
चन्द्र	10 y.0 m.0 d.	27:01:2069
मंगल	7 y.0 m.0 d.	27:01:2076
राहु	18 y.0 m.0 d.	27:01:2094

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से --- तक
गुरू	
शनि	02:11:1976 - 26:09:1978
बुध	27:09:1978 - 02:01:1981
केतु	03:01:1981 - 08:12:1981
शुक्र	09:12:1981 - 08:08:1984
सूर्य	09:08:1984 - 28:05:1985
चन्द्र	29:05:1985 - 26:09:1986
मंगल	27:09:1986 - 02:09:1987
राहु	03:09:1987 - 26:01:1990

शनि दशा

अन्तर्दशा	से --- तक
शनि	27:01:1990 - 29:01:1993
बुध	30:01:1993 - 08:10:1995
केतु	09:10:1995 - 17:11:1996
शुक्र	18:11:1996 - 17:01:2000
सूर्य	18:01:2000 - 29:12:2000
चन्द्र	30:12:2000 - 30:07:2002
मंगल	31:07:2002 - 08:09:2003
राहु	09:09:2003 - 15:07:2006
गुरू	16:07:2006 - 26:01:2009

बुध दशा

अन्तर्दशा	से --- तक
बुध	27:01:2009 - 24:06:2011
केतु	25:06:2011 - 20:06:2012
शुक्र	21:06:2012 - 21:04:2015
सूर्य	22:04:2015 - 25:02:2016
चन्द्र	26:02:2016 - 27:07:2017
मंगल	28:07:2017 - 24:07:2018
राहु	25:07:2018 - 10:02:2021
गुरू	11:02:2021 - 18:05:2023
शनि	19:05:2023 - 26:01:2026

केतु दशा

अन्तर्दशा	से --- तक
केतु	27:01:2026 - 24:06:2026
शुक्र	25:06:2026 - 24:08:2027
सूर्य	25:08:2027 - 29:12:2027
चन्द्र	30:12:2027 - 30:07:2028
मंगल	31:07:2028 - 26:12:2028
राहु	27:12:2028 - 14:01:2030
गुरू	15:01:2030 - 20:12:2030
शनि	21:12:2030 - 29:01:2032
बुध	30:01:2032 - 26:01:2033

Sample B

Sample G

विंशोत्तरी दशा

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
शुक्र	01:12:2018 - 01:04:2022
सूर्य	02:04:2022 - 01:04:2023
चन्द्र	02:04:2023 - 30:11:2024
मंगल	01:12:2024 - 30:01:2026
राहु	31:01:2026 - 30:01:2029
गुरू	31:01:2029 - 30:09:2031
शनि	01:10:2031 - 30:11:2034
बुध	01:12:2034 - 30:09:2037
केतु	01:10:2037 - 30:11:2038

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
सूर्य	01:12:2038 - 19:03:2039
चन्द्र	20:03:2039 - 18:09:2039
मंगल	19:09:2039 - 24:01:2040
राहु	25:01:2040 - 18:12:2040
गुरू	19:12:2040 - 06:10:2041
शनि	07:10:2041 - 18:09:2042
बुध	19:09:2042 - 25:07:2043
केतु	26:07:2043 - 30:11:2043
शुक्र	01:12:2043 - 30:11:2044

चन्द्र दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
चन्द्र	01:12:2044 - 30:09:2045
मंगल	01:10:2045 - 01:05:2046
राहु	02:05:2046 - 30:10:2047
गुरू	31:10:2047 - 01:03:2049
शनि	02:03:2049 - 30:09:2050
बुध	01:10:2050 - 29:02:2052
केतु	01:03:2052 - 30:09:2052
शुक्र	01:10:2052 - 31:05:2054
सूर्य	01:06:2054 - 30:11:2054

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
मंगल	01:12:2054 - 28:04:2055
राहु	29:04:2055 - 16:05:2056
गुरू	17:05:2056 - 22:04:2057
शनि	23:04:2057 - 31:05:2058
बुध	01:06:2058 - 28:05:2059
केतु	29:05:2059 - 24:10:2059
शुक्र	25:10:2059 - 24:12:2060
सूर्य	25:12:2060 - 01:05:2061
चन्द्र	02:05:2061 - 30:11:2061

राहु दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
राहु	01:12:2061 - 12:08:2064
गुरू	13:08:2064 - 05:01:2067
शनि	06:01:2067 - 12:11:2069
बुध	13:11:2069 - 31:05:2072
केतु	01:06:2072 - 19:06:2073
शुक्र	20:06:2073 - 18:06:2076
सूर्य	19:06:2076 - 13:05:2077
चन्द्र	14:05:2077 - 12:11:2078
मंगल	13:11:2078 - 30:11:2079

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
शुक्र	27:01:2033 - 27:05:2036
सूर्य	28:05:2036 - 28:05:2037
चन्द्र	29:05:2037 - 26:01:2039
मंगल	27:01:2039 - 27:03:2040
राहु	28:03:2040 - 28:03:2043
गुरू	29:03:2043 - 26:11:2045
शनि	27:11:2045 - 26:01:2049
बुध	27:01:2049 - 26:11:2051
केतु	27:11:2051 - 26:01:2053

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
सूर्य	27:01:2053 - 15:05:2053
चन्द्र	16:05:2053 - 14:11:2053
मंगल	15:11:2053 - 22:03:2054
राहु	23:03:2054 - 13:02:2055
गुरू	14:02:2055 - 02:12:2055
शनि	03:12:2055 - 14:11:2056
बुध	15:11:2056 - 20:09:2057
केतु	21:09:2057 - 26:01:2058
शुक्र	27:01:2058 - 26:01:2059

चन्द्र दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
चन्द्र	27:01:2059 - 26:11:2059
मंगल	27:11:2059 - 26:06:2060
राहु	27:06:2060 - 26:12:2061
गुरू	27:12:2061 - 27:04:2063
शनि	28:04:2063 - 26:11:2064
बुध	27:11:2064 - 27:04:2066
केतु	28:04:2066 - 26:11:2066
शुक्र	27:11:2066 - 27:07:2068
सूर्य	28:07:2068 - 26:01:2069

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
मंगल	27:01:2069 - 24:06:2069
राहु	25:06:2069 - 12:07:2070
गुरू	13:07:2070 - 18:06:2071
शनि	19:06:2071 - 27:07:2072
बुध	28:07:2072 - 24:07:2073
केतु	25:07:2073 - 20:12:2073
शुक्र	21:12:2073 - 19:02:2075
सूर्य	20:02:2075 - 27:06:2075
चन्द्र	28:06:2075 - 26:01:2076

राहु दशा

अन्तर्दशा	से —— तक
राहु	27:01:2076 - 08:10:2078
गुरू	09:10:2078 - 03:03:2081
शनि	04:03:2081 - 08:01:2084
बुध	09:01:2084 - 27:07:2086
केतु	28:07:2086 - 15:08:2087
शुक्र	16:08:2087 - 15:08:2090
सूर्य	16:08:2090 - 09:07:2091
चन्द्र	10:07:2091 - 08:01:2093
मंगल	09:01:2093 - 26:01:2094

षोडश वर्ग कुण्डली – 1

होरा कुण्डली
धन दौलत के लिए

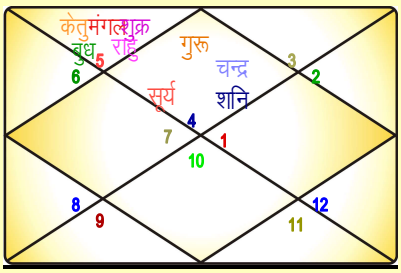

सूर्य	कर्क (1ला)	कर्क (12वां)	1 / 1
चन्द्र	कर्क (1ला)	कर्क (12वां)	1 / 1
मंगल	सिंह (2रा)	कर्क (12वां)	2 / 12
बुध	सिंह (2रा)	सिंह (1ला)	1 / 1
गुरू	कर्क (1ला)	कर्क (12वां)	1 / 1
शुक्र	सिंह (2रा)	सिंह (1ला)	1 / 1
शनि	कर्क (1ला)	सिंह (1ला)	2 / 12
राहु	सिंह (2रा)	सिंह (1ला)	1 / 1
केतु	सिंह (2रा)	सिंह (1ला)	1 / 1

होरा कुण्डली
धन दौलत के लिए

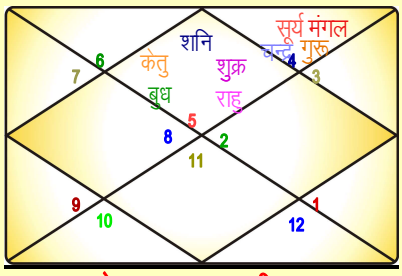

द्रेष्काण कुण्डली
सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य

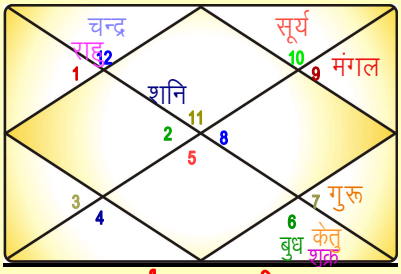

सूर्य	मकर (12वां)	कुम्भ (1ला)	2 / 12
चन्द्र	मीन (2रा)	तुला (9वां)	6 / 8
मंगल	धनु (11वां)	मिथुन (5वां)	7 / 7
बुध	कन्या (8वां)	कुम्भ (1ला)	6 / 8
गुरू	तुला (9वां)	वृष (4था)	6 / 8
शुक्र	कन्या (8वां)	कर्क (6ठा)	3 / 11
शनि	कुम्भ (1ला)	मीन (2रा)	2 / 12
राहु	मीन (2रा)	कुम्भ (1ला)	2 / 12
केतु	कन्या (8वां)	सिंह (7वां)	2 / 12

द्रेष्काण कुण्डली
सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य

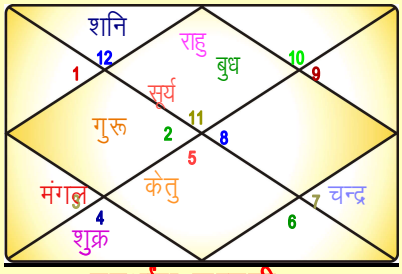

चतुर्थांश कुण्डली
भाग्य और रिहायशी मकान

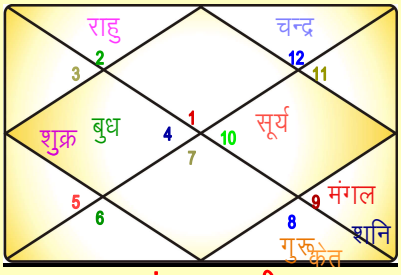

सूर्य	मकर (10वां)	मेष (4था)	4 / 10
चन्द्र	मीन (12वां)	सिंह (8वां)	6 / 8
मंगल	धनु (9वां)	कर्क (7वां)	6 / 8
बुध	कर्क (4था)	मकर (1ला)	7 / 7
गुरू	वृश्चिक (8वां)	वृष (5वां)	7 / 7
शुक्र	कर्क (4था)	वृष (5वां)	3 / 11
शनि	धनु (9वां)	मेष (4था)	5 / 9
राहु	वृष (2रा)	मकर (1ला)	5 / 9
केतु	वृश्चिक (8वां)	कर्क (7वां)	5 / 9

चतुर्थांश कुण्डली
भाग्य और रिहायशी मकान

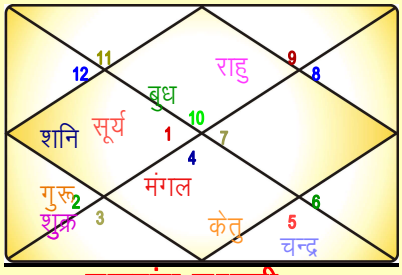

सप्तमांश कुण्डली
संतान और उनकी संतान

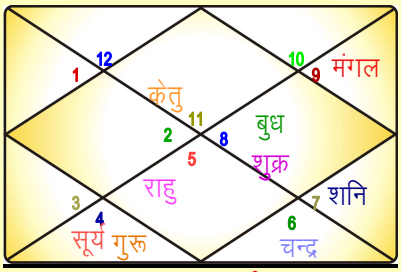

सूर्य	कर्क (6ठा)	मकर (2रा)	7 / 7
चन्द्र	कन्या (8वां)	कर्क (8वां)	3 / 11
मंगल	धनु (11वां)	मीन (4था)	4 / 10
बुध	वृश्चिक	धनु (1ला)	2 / 12
गुरू	कर्क (6ठा)	धनु (1ला)	6 / 8
शुक्र	वृश्चिक	तुला (11वां)	2 / 12
शनि	तुला (9वां)	मिथुन (7वां)	5 / 9
राहु	सिंह (7वां)	धनु (1ला)	5 / 9
केतु	कुम्भ (1ला)	मिथुन (7वां)	5 / 9

सप्तमांश कुण्डली
संतान और उनकी संतान

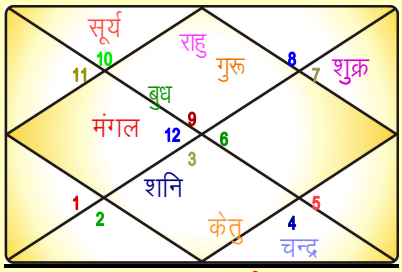

नवांश कुण्डली
जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य

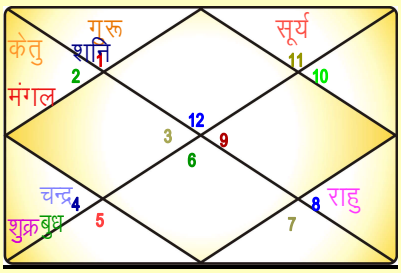

सूर्य	कुम्भ (12वां)	कुम्भ (2रा)	1 / 1
चन्द्र	कर्क (5वां)	मेष (4था)	4 / 10
मंगल	वृष (3रा)	मेष (4था)	2 / 12
बुध	कर्क (5वां)	मकर (1ला)	7 / 7
गुरू	मेष (2रा)	कुम्भ (2रा)	3 / 11
शुक्र	कर्क (5वां)	मकर (1ला)	7 / 7
शनि	मेष (2रा)	मकर (1ला)	4 / 10
राहु	वृश्चिक (9वां)	मकर (1ला)	3 / 11
केतु	वृष (3रा)	कर्क (7वां)	3 / 11

नवांश कुण्डली
जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य

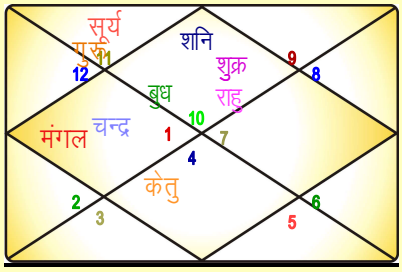

MindSutra Software Technologies

षोडश वर्ग कुण्डली – 2

दशमांश कुण्डली
कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता

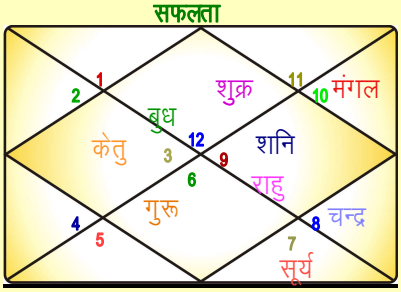

सूर्य	तुला (8वां)	मीन (3रा)	6 / 8
चन्द्र	वृश्चिक (9वां)	कन्या (9वां)	3 / 11
मंगल	मकर (11वां)	वृष (5वां)	5 / 9
बुध	मीन (1ला)	कुम्भ (2रा)	2 / 12
गुरू	कन्या (7वां)	कुम्भ (2रा)	6 / 8
शुक्र	मीन (1ला)	कुम्भ (2रा)	2 / 12
शनि	धनु (10वां)	तुला (10वां)	3 / 11
राहु	धनु (10वां)	मकर (1ला)	2 / 12
केतु	मिथुन (4था)	कर्क (7वां)	2 / 12

दशमांश कुण्डली
कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता

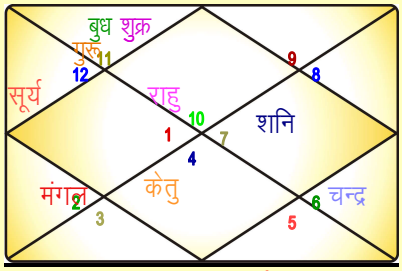

द्वादशांश कुण्डली
माता–पिता का जीवन और स्वास्थ्य

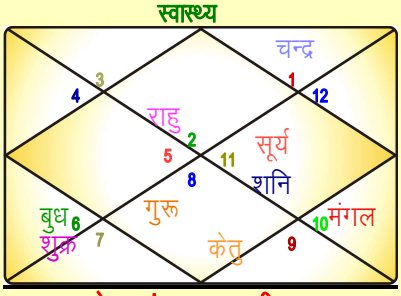

सूर्य	कुम्भ (10वां)	मेष (3रा)	3 / 11
चन्द्र	मेष (12वां)	तुला (9वां)	7 / 7
मंगल	मकर (9वां)	कर्क (6ठा)	7 / 7
बुध	कन्या (5वां)	मीन (2रा)	7 / 7
गुरू	वृश्चिक (7वां)	मिथुन (5वां)	6 / 8
शुक्र	कन्या (5वां)	कर्क (6ठा)	3 / 11
शनि	कुम्भ (10वां)	मेष (3रा)	3 / 11
राहु	वृष (1ला)	कुम्भ (1ला)	4 / 10
केतु	वृश्चिक (7वां)	सिंह (7वां)	4 / 10

द्वादशांश कुण्डली
माता–पिता का जीवन और स्वास्थ्य

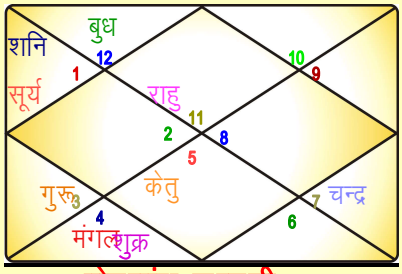

षोडशांश कुण्डली
वाहन से संबंधित बातें

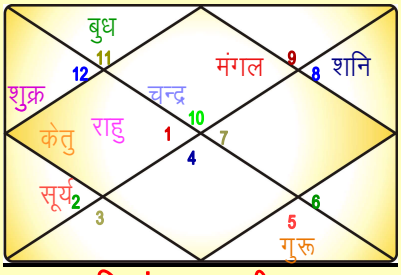

सूर्य	वृष (5वां)	धनु (4था)	6 / 8
चन्द्र	मकर (1ला)	कर्क (11वां)	7 / 7
मंगल	मकर (1ला)	मेष (8वां)	4 / 10
बुध	कुम्भ (2रा)	तुला (2रा)	5 / 9
गुरू	सिंह (8वां)	तुला (2रा)	3 / 11
शुक्र	मीन (3रा)	कर्क (11वां)	5 / 9
शनि	वृश्चिक	मेष (8वां)	6 / 8
राहु	मेष (4था)	कन्या (1ला)	6 / 8
केतु	मेष (4था)	कन्या (1ला)	6 / 8

षोडशांश कुण्डली
वाहन से संबंधित बातें

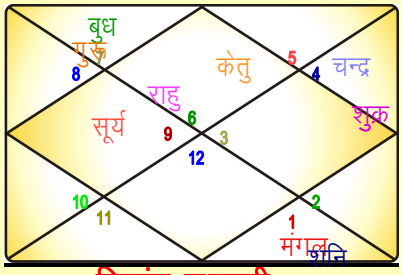

विशांश कुण्डली
आध्यात्मिक रूझान

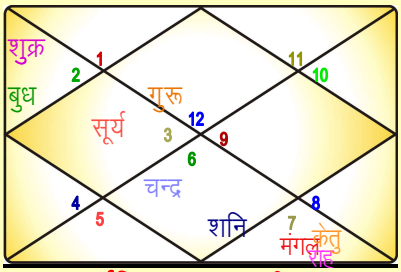

सूर्य	मिथुन (4था)	कुम्भ (5वां)	5 / 9
चन्द्र	कन्या (7वां)	कुम्भ (5वां)	6 / 8
मंगल	तुला (8वां)	कर्क (10वां)	4 / 10
बुध	वृष (3रा)	धनु (3रा)	6 / 8
गुरू	मीन (1ला)	मीन (6ठा)	1 / 1
शुक्र	वृष (3रा)	कुम्भ (5वां)	4 / 10
शनि	कन्या (7वां)	कर्क (10वां)	3 / 11
राहु	तुला (8वां)	तुला (1ला)	1 / 1
केतु	तुला (8वां)	तुला (1ला)	1 / 1

विशांश कुण्डली
आध्यात्मिक रूझान

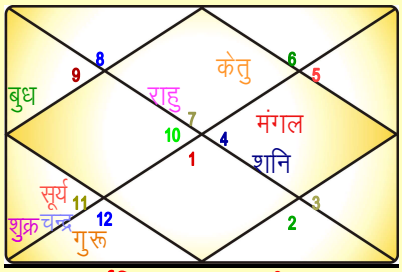

चर्तुविंशांश कुण्डली
शिक्षा, ज्ञान और समझ

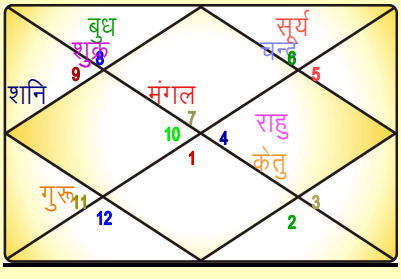

सूर्य	कन्या (12वां)	सिंह (5वां)	2 / 12
चन्द्र	कन्या (12वां)	मकर (10वां)	5 / 9
मंगल	तुला (1ला)	कुम्भ (11वां)	5 / 9
बुध	वृश्चिक (2रा)	मिथुन (3रा)	6 / 8
गुरू	कुम्भ (5वां)	तुला (7वां)	5 / 9
शुक्र	वृश्चिक (2रा)	धनु (9वां)	2 / 12
शनि	धनु (3रा)	मकर (10वां)	2 / 12
राहु	कर्क (10वां)	मेष (1ला)	4 / 10
केतु	कर्क (10वां)	मेष (1ला)	4 / 10

चर्तुविंशांश कुण्डली
शिक्षा, ज्ञान और समझ

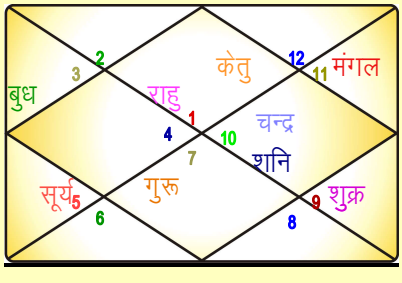

षोडश वर्ग कुण्डली – 3

सप्तविंशांश कुण्डली
ताकत और दुर्बलता

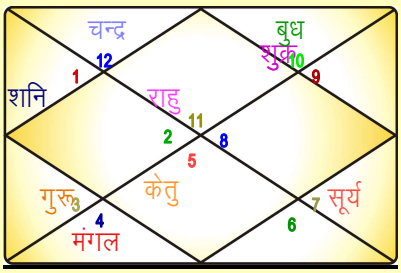

सूर्य	तुला (9वां)	धनु (6ठा)	3 / 11
चन्द्र	मीन (2रा)	मिथुन (12वां)	4 / 10
मंगल	कर्क (6ठा)	मिथुन (12वां)	2 / 12
बुध	मकर (12वां)	कन्या (3रा)	5 / 9
गुरू	मिथुन (5वां)	वृश्चिक (5वां)	6 / 8
शुक्र	मकर (12वां)	सिंह (2रा)	6 / 8
शनि	मेष (3रा)	कन्या (3रा)	6 / 8
राहु	कुम्भ (1ला)	कर्क (1ला)	6 / 8
केतु	सिंह (7वां)	मकर (7वां)	6 / 8

सप्तविंशांश कुण्डली
ताकत और दुर्बलता

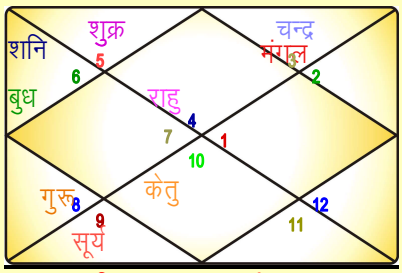

त्रिंशांश कुण्डली
दरिद्रता, कठिनाईयाँ और दुर्गति

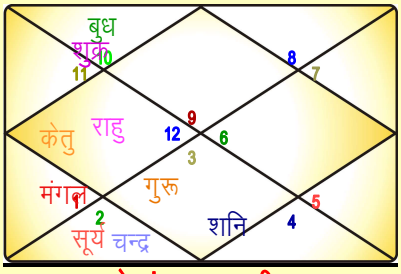

सूर्य	वृष (6ठा)	धनु (1ला)	6 / 8
चन्द्र	वृष (6ठा)	मिथुन (7वां)	2 / 12
मंगल	मेष (5वां)	मिथुन (7वां)	3 / 11
बुध	मकर (2रा)	धनु (1ला)	2 / 12
गुरू	मिथुन (7वां)	वृष (6ठा)	2 / 12
शुक्र	मकर (2रा)	मकर (2रा)	1 / 1
शनि	मिथुन (7वां)	मकर (2रा)	6 / 8
राहु	मीन (4था)	धनु (1ला)	4 / 10
केतु	मीन (4था)	धनु (1ला)	4 / 10

त्रिंशांश कुण्डली
दरिद्रता, कठिनाईयाँ और दुर्गति

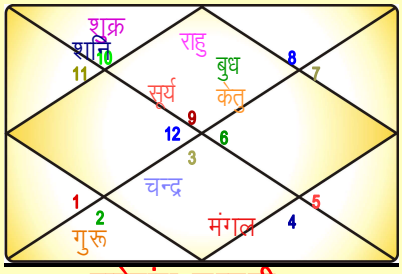

खवेदांश कुण्डली
शुभ–अशुभ घटनाएँ

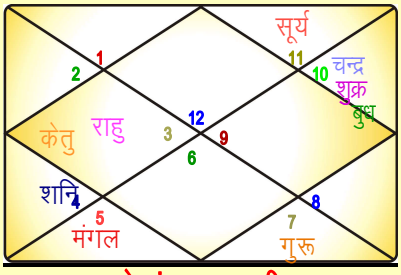

सूर्य	कुम्भ (12वां)	मकर (9वां)	2 / 12
चन्द्र	मकर (11वां)	कन्या (5वां)	5 / 9
मंगल	सिंह (6ठा)	तुला (6ठा)	3 / 11
बुध	मकर (11वां)	कन्या (5वां)	5 / 9
गुरू	तुला (8वां)	मेष (12वां)	7 / 7
शुक्र	मकर (11वां)	कुम्भ (10वां)	2 / 12
शनि	कर्क (5वां)	मेष (12वां)	4 / 10
राहु	मिथुन (4था)	वृष (1ला)	2 / 12
केतु	मिथुन (4था)	वृष (1ला)	2 / 12

खवेदांश कुण्डली
शुभ–अशुभ घटनाएँ

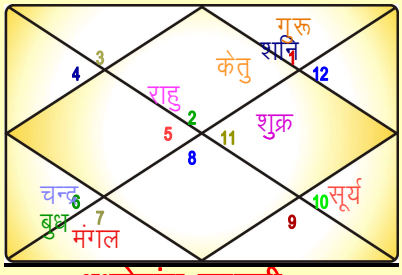

अक्षवेदांश कुण्डली
सभी मुद्दों के लिए

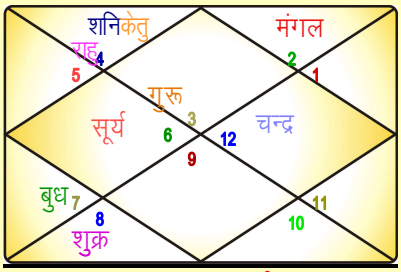

सूर्य	कन्या (4था)	मेष (10वां)	6 / 8
चन्द्र	मीन (10वां)	वृष (11वां)	3 / 11
मंगल	वृष (12वां)	कुम्भ (8वां)	4 / 10
बुध	तुला (5वां)	वृश्चिक (5वां)	2 / 12
गुरू	मिथुन (1ला)	मीन (9वां)	4 / 10
शुक्र	वृश्चिक (6ठा)	मेष (10वां)	6 / 8
शनि	कर्क (2रा)	कुम्भ (8वां)	6 / 8
राहु	कर्क (2रा)	कर्क (1ला)	1 / 1
केतु	कर्क (2रा)	कर्क (1ला)	1 / 1

अक्षवेदांश कुण्डली
सभी मुद्दों के लिए

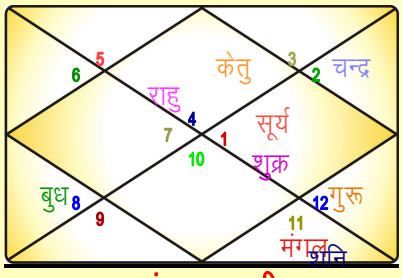

षष्ट्यांश कुण्डली
सभी मुद्दों के लिए

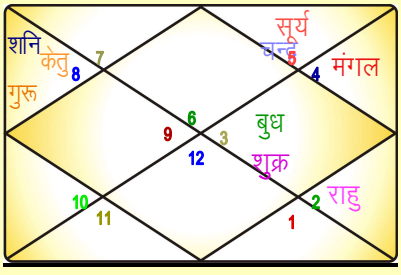

सूर्य	तुला (4था)	कर्क (2रा)	4 / 10
चन्द्र	तुला (4था)	सिंह (3रा)	3 / 11
मंगल	मेष (10वां)	सिंह (3रा)	5 / 9
बुध	कुम्भ (8वां)	मिथुन (1ला)	5 / 9
गुरू	सिंह (2रा)	तुला (5वां)	3 / 11
शुक्र	कुम्भ (8वां)	कुम्भ (9वां)	1 / 1
शनि	सिंह (2रा)	कुम्भ (9वां)	7 / 7
राहु	मकर (7वां)	मिथुन (1ला)	6 / 8
केतु	मकर (7वां)	मिथुन (1ला)	6 / 8

षष्ट्यांश कुण्डली
सभी मुद्दों के लिए

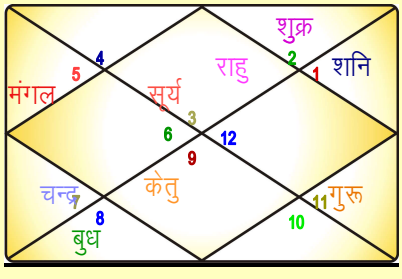

नाम :	Sample B
जन्म तारीख :	17 / 18:01:1975(शुक / शनि)
जन्म समय :	01:45:00
जन्म स्थान :	Gurgaon (INDIA)

जन्म लग्न कुण्डली

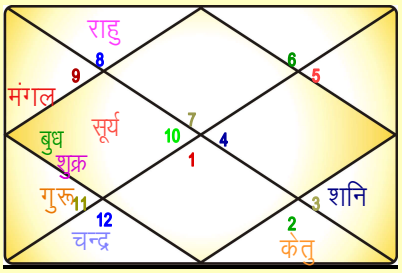

नवांश कुण्डली

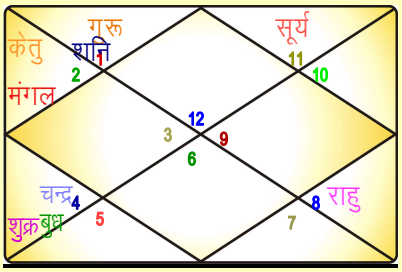

जन्म नक्षत्र :	पूर्वाभाद्रपद	चरण :	4
जन्म राशि :	मीन		

नाम :	Sample G
जन्म तारीख :	01 / 02:11:1976(सोम / मंगल)
जन्म समय :	06:09:45
जन्म स्थान :	New Delhi (INDIA)

जन्म लग्न कुण्डली

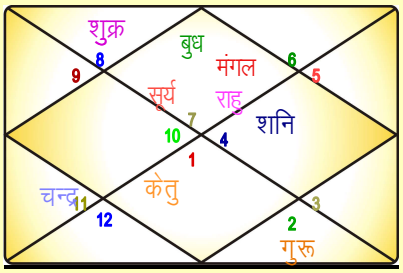

नवांश कुण्डली

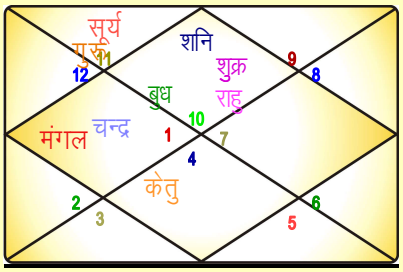

जन्म नक्षत्र :	पूर्वाभाद्रपद	चरण :	1
जन्म राशि :	कुम्भ		

अष्टकूट गुण मिलान (36 गुण)

कूट का नाम	Sample	Sample	पूर्णांक	प्राप्तांक	वैवाहिक जीवन पर प्रभाव
वर्ण कूट	ब्राह्मण	शूद्र	1	1	आध्यात्मिक विकास
वश्य कूट	जलचर	द्विपद	2	0.5	प्राकृतिक सामंजस्य
तारा कूट	जन्म	जन्म	3	3	विवाह–सम्बन्ध का स्थायित्व
योनि कूट	सिंह	सिंह	4	4	अव्यक्त विशेषताएं
राशिशमैत्री कूट	गुरू	शनि	5	3	मानसिक/मनोवैज्ञानिक प्रवृति
गण कूट	मनुष्य	मनुष्य	6	6	विवाह सम्बन्धित अनुरूपता
राशि कूट	मीन	कुम्भ	7	0	आपसी तालमेल
नाड़ी कूट	आदि	आदि	8	0	शारीरिक कारक
योग			36	17.5	49%

अष्टकूट गुण मिलान

कूट का नाम	Sample	Sample	पू0	प्रा0	दोष	परिहार	वैवाहिक जीवन पर प्रभाव
वर्ण	ब्राह्मण	शूद्र	1	1			आध्यात्मिक विकास
वश्य	जलचर	द्विपद	2	0.5	हाँ	3, 6	प्राकृतिक सामंजस्य
तारा	जन्म	जन्म	3	3			विवाह–सम्बन्ध का स्थायित्व
योनि	सिंह	सिंह	4	4			अव्यक्त विशेषताएं
राशिशमैत्री	गुरू	शनि	5	3			मानसिक/मनोवैज्ञानिक प्रवृति
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6			विवाह सम्बन्धित अनुरूपता
राशि	मीन	कुम्भ	7	0	हाँ	3	आपसी तालमेल
नाड़ी	आदि	आदि	8	0	हाँ	9, 11, 12	शारीरिक कारक
योग			36	17.5	49%		
द्विर्द्वादश दोष					हाँ	3	
नवमपंचम दोष							
षडष्टक दोष							

परिहारों की सूची

1. वर और वधु के राशिश परस्पर मित्र–मित्र या मित्र–सम हैं।
2. वर और वधु के राशिश एक ही हैं।
3. वर और वधु के नवमांशेश परस्पर मित्र–मित्र या मित्र–सम हैं।
4. वर और वधु के नवमांशेश एक ही हैं।
5. वर के राशिश का वर्ण वधु के राशिश के वर्ण से उत्तम है।
6. योनिशुद्धि (योनि मैत्री) उपस्थित है।
7. भकूटशुद्धि (स्दभकूट) उपस्थित है।
8. वश्यशुद्धि उपस्थित है।
9. वर और वधु के नक्षत्र एक हैं और राशियां भिन्न हैं।
10. वर और वधु की राशियां एक हैं और नक्षत्र भिन्न हैं।
11. वर और वधु के नक्षत्र एक हैं और नक्षत्र–चरन भिन्न हैं।
12. वर और वधु की कुण्डली के मध्य नाड़ी पादवेध नहीं है।
13. वर और वधु के नवमांशेश परस्पर मित्र–मित्र हैं (नवम–पंचम दोष का परिहार)
14. वर और वधु के राशिश परस्पर मित्र–मित्र हैं (नवम–पंचम दोष का परिहार)

सुक्ष्मग्राही बिन्दु

Sample		Sample	
बीज–स्फुट(1)	167:27:24	क्षेत्र–स्फुट(1)	200:07:20
बीज–स्फुट(2)	055:57:25	क्षेत्र–स्फुट(2)	202:40:14
बीज–स्फुट(3)	201:19:38	क्षेत्र–स्फुट(3)	003:18:02
शुभ लक्षण	60 %	शुभ लक्षण	12 %
योग (वर सूर्य + वधु चन्द्र)		योग (वधु सूर्य + वर चन्द्र)	
वारियन (235:53:28)		ब्याधात (168:47:55)	

नाम :	Sample B	नाम :	Sample G
जन्म तारीख :	17 / 18:01:1975(शुक / शनि)	जन्म तारीख :	01 / 02:11:1976(सोम / मंगल)
जन्म समय :	01:45:00	जन्म समय :	06:09:45
जन्म स्थान :	Gurgaon (INDIA)	जन्म स्थान :	New Delhi (INDIA)

जन्म लग्न कुण्डली

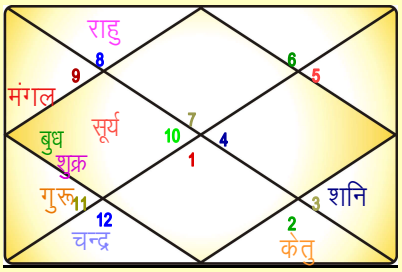

जन्म लग्न कुण्डली

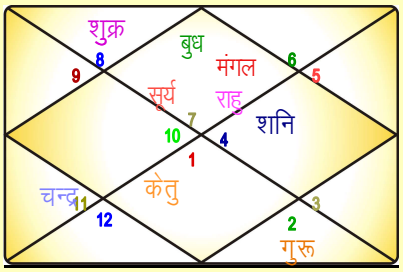

नवांश कुण्डली

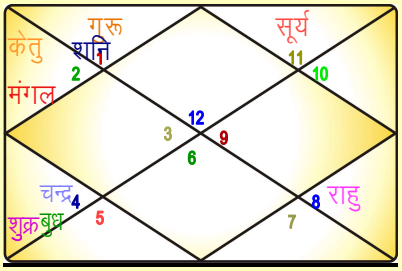

नवांश कुण्डली

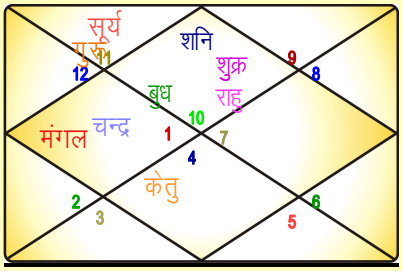

जन्म नक्षत्र :	पूर्वाभाद्रपद	चरण :	4	जन्म नक्षत्र :	पूर्वाभाद्रपद	चरण :	1
जन्म राशि :	मीन			जन्म राशि :	कुम्भ		

द्वादश कूट गुण मिलान (50 गुण)

कूट का नाम	Sample	Sample	पूर्णांक	प्राप्तांक	वैवाहिक जीवन पर प्रभाव
दीन कूट	पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	3	0	विवाह–सम्बन्ध का स्थायित्व
गण कूट	मनुष्य	मनुष्य	6	6	विवाह सम्बन्धित अनुरूपता
योनि कूट	सिंह	सिंह	4	4	अव्यक्त विशेषताएं
राशि कूट	मीन	कुम्भ	7	0	आपसी तालमेल
ग्रह मैत्री कूट	गुरू	शनि	2	2	मानसिक / मनोवैज्ञानिक प्रवृति
रज्जु कूट	नाभिरज्जु	नाभिरज्जु	7	0	रिश्ते की समयावधि
वेध कूट	पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	3	3	असहमति की संभावना
वश्य कूट	जलचर	द्विपद	2	0.5	प्राकृतिक सामंजस्य
महेन्द्र कूट	पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	4	0	समृद्धि और संपन्नता
स्त्री–दीर्घ कूट	पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	3	0	आपसी आकर्षण
नाड़ी कूट	आदि	आदि	8	0	शारीरिक कारक
वर्ण कूट	ब्राह्मण	शूद्र	1	1	आध्यात्मिक विकास
योग			50	16.5	33 प्रतिशत

MindSutra Software Technologies

नाम :	Sample B	नाम :	Sample G
जन्म तारीख :	17 / 18:01:1975(शुक / शनि)	जन्म तारीख :	01 / 02:11:1976(सोम / मंगल)
जन्म समय :	01:45:00	जन्म समय :	06:09:45
जन्म स्थान :	Gurgaon (INDIA)	जन्म स्थान :	New Delhi (INDIA)

जन्म लग्न कुण्डली

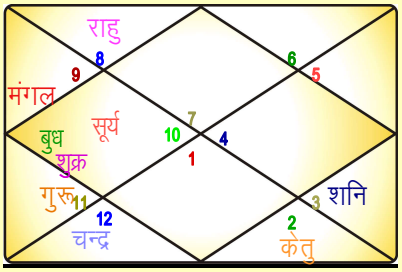

जन्म लग्न कुण्डली

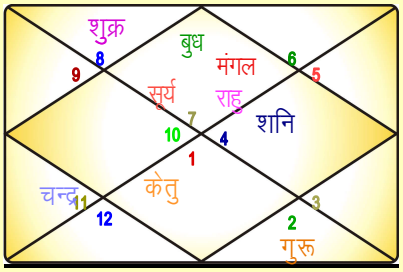

जन्म नक्षत्र :	पूर्वाभाद्रपद	चरण :	4	जन्म नक्षत्र :	पूर्वाभाद्रपद	चरण :	1
जन्म राशि :	मीन			जन्म राशि :	कुम्भ		

विवाह मेलापन सारिणी (कालप्रकाशिका)

पोरूथम	Sample	Sample	प्राप्तांक	परिणाम	वैवाहिक जीवन पर प्रभाव
दीन	पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	0	अशुभ	अच्छा स्वास्थ्य और उम्र
गण	मनुष्य	मनुष्य	1	शुभ	खुशहाली
महेन्द्र	पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	1	शुभ	अच्छी और खुशहाल सन्तान
स्त्री–दीर्घ	पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	0	अशुभ	सर्वांगीण विकास और समृद्धि
योनि	सिंह	सिंह	1	शुभ	यौन अनुरूपता/सुसंगतता
राशि	मीन	कुम्भ	0	अशुभ	वैवाहिक जीवन में खुशहाली
राश्याधिपति	गुरू	शनि	0.5	मध्यम	स्नेहशील और अनुकुल जीवनसाथी
वश्य	मीन	कुम्भ	0	अशुभ	पारस्परिक आकर्षण और स्नेह
रज्जु	नाभिरज्जु	नाभिरज्जु	0	अशुभ	सुखी और लम्बा वैवाहिक जीवन/मांगलिक दोष से बचाव
वेध	पूर्वाभाद्रपद	पूर्वाभाद्रपद	1	शुभ	वैवाहिक जीवन में क्लेश से बचाव
योग			4.5/10		45%
लिंग	पुरूष नक्षत्र	पुरूष नक्षत्र	0	अशुभ	
गोत्र	पुलस्य	पुलस्य	0	अशुभ	
वर्ण	ब्राह्मण	वैश्य	1	शुभ	
नाड़ी	दक्षिण पार्श्व	दक्षिण पार्श्व	0	अशुभ	

ग्रह / लग्न / चन्द्र / नवांश राशि मेलापन

इस भाग में हम 50 से भी अधिक ग्रह–युतियों की जाँच कर रहें हैं, जिनका वर–वधू की जन्मकुण्डलीयों में मिलना आवश्यक होता है। जितने ज्यादा ये युतियाँ वर–वधू की जन्मकुण्डलीयों में विद्यमान होंगी दाम्पत्य जीवन उतना ही अनुकूल होगा।

वर व कन्या दोनों की जन्मकुण्डली में लग्न राशि समान है, यह स्थिति दाम्पत्य जीवन के लिए अनुकूल साबित होगी।

वर और वधु दोनों की जन्मकुण्डली में लग्न राशि वायु तत्व की है, यह स्थिति दाम्पत्य जीवनके लिए अनुकूल साबित होगी।

वर का सप्तमेश वधू के लग्न में स्थित है, यह स्थिति दाम्पत्य जीवन के लिए अनुकूल साबित होगी।

वधु की कुण्डली में मंगल और शुक्र की युति लग्न या सप्तम भाव में है। वधु को दाम्पत्य जीवन को गंभीरता से लेना चाहिए और अपनी जिम्मेदारियों को भली–भांति निवार्हित करना चाहिए।

वधु की कुण्डली में निम्न पाँच विच्छेदात्मक घटकों शनि, सूर्य, राहु, द्वादशेश और राहु अधिष्ठित राशि के स्वामी में से दो या दो से अधिक घटकों की युति अथवा दृष्टि का प्रभाव सप्तम भाव पर है। वधु को अपने दाम्पत्य जीवन में स्थिरता रखना कठिन हो सकता है।

वधु की कुण्डली में शुक्र अष्टम, द्वादश, द्वितीय अथवा षष्ठ भाव में स्थित है अथवा शत्रु राशि या नीच राशि में या अस्त है। यह स्थिति दाम्पत्य जीवन के लिए अनिष्टकारी है।

वर–वधु दोनों की कुण्डलियों में लग्नेश एक ही है। यह दाम्पत्य जीवन की सुखद बनाने वालीयुति है।

वधु का सप्तमेश लग्न में है। वधु का जीवनसाथी उसका आजीवन वफादार रहेगा।

वधु की कुण्डली में मंगल और राहु की युति है या राहु की दृष्टि मंगल पर पड़ रही है। यह स्थिति दाम्पत्य जीवन में जीवनसाथी के साथ संघर्ष की ओर इंगित करती है।

वधु की कुण्डली में सूर्य और राहु की युति है या राहु की दृष्टि सूर्य पर पड़ रही है। यह स्थिति दाम्पत्य जीवन में असमानता और हीन भावना से ग्रस्त होने की ओर इंगित करती है।

भावी दम्पति की कुण्डली में वैवाहिक सामंजस्य का विस्तृत विवेचना

(अष्टकूट – 36 गुण)

वर्ण कूट की विवेचना –

वर्ण कूट दम्पति की स्वभाव और रंग को दर्शाता है। यह भावी दम्पति की आध्यात्मिक ऊँचाईयों को छूने की संभावना को दर्शाता है।

वर का वर्ण ब्राह्मण है, वधु का वर्ण शूद्र है। वर्ण कूट का पूर्ण गुण 1 है। वर और वधु के वर्णका मिलान करने पर 1 गुण प्राप्त हुआ है।

भावी दम्पति के कुण्डलियों में वर्ण दोष प्रभावी नहीं है।

वश्य कूट की विवेचना –

वश्य का अर्थ होता है वश में करना। यह कूट उस तथ्य की ओर इंगित करता है, कि वर–वधू में एक दूसरे को कौन अपने वश में करेगा या दाम्पत्य जीवन में किसके फैसले ज्यादा प्रभावी होंगे।

वर का वश्य जलचर है, वधु का वश्य द्विपद है। वश्य कूट का पूर्ण गुण 2 है। वर और वधु केवश्य का मिलान करने पर 0.5 गुण प्राप्त हुआ है।

भावी दम्पति के कुण्डलियों में वश्य दोष प्रभावी है, परन्तु वश्य दोष का परिहार उपस्थित है, जो कि निम्न हैं ––

वर और वधु के नवमांशेश परस्पर मित्र–मित्र या मित्र–सम हैं।
योनिशुद्धि (योनि मैत्री) उपस्थित है।

तारा कूट की विवेचना –

तारा कूट की उपस्थिति, यह सुनिश्चित करती है कि भावी दम्पति स्वस्थ रहेंगे और किसी भी व्याधि से मुक्त रहते हुए उनका दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतित होगा। दिन कूट के अनुपस्थित होने पर भावी दम्पति के विचारों में अनुकूलता नहीं रहती है और इनके बीच दिन–प्रतिदिन के छोटे–मोटे मुद्दों पर मतभेद हो सकते हैं और दाम्पत्य

जीवन में एक दूसरे का सहयोग करने भावना की कमी हो सकती है।

वधु के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिनने पर वर की तारा जन्म प्राप्त हुआ है। वर के नक्षत्र सेवधु के नक्षत्र तक गिनने पर वधु की तारा जन्म प्राप्त हुआ है। तारा कूट का पूर्ण गुण 3 है।वर और वधु के तारा का मिलान करने पर 3 गुण प्राप्त हुआ है।

भावी दम्पति के कुण्डलियों में तारा दोष प्रभावी नहीं है।

योनि कूट की विवेचना –

योनि कूट की उपस्थिति, भावी दम्पति के दाम्पत्य जीवन में शारीरिक सुख और आकर्षणकी मात्रा का निर्धारण करता है।

वर की योनि सिंह है, वधु की योनि सिंह है। योनि कूट का पूर्ण गुण 4 है। वर और वधु के योनि का मिलान करने पर 4 गुण प्राप्त हुआ है।

भावी दम्पति के कुण्डलियों में योनि दोष प्रभावी नहीं है।

राशिशमैत्री कूट की विवेचना –

ग्रह मैत्री (राश्याधिपति मैत्री) कूट, भावी दम्पति की समृद्धि और सद्गुणों को दर्शाता है। यह भावी दम्पति के स्वास्थ्य और उनके व्यक्तिगत व्यवहार, एवम् उनके बीच पारस्परिकआकर्षण की ओर भी इंगित करता है।

वर का राशिश गुरू है, वधु का राशिश शनि है। राशिश मैत्रि कूट का पूर्ण गुण 5 है। वर और वधु के राशिश मैत्रि का मिलान करने पर 3 गुण प्राप्त हुआ है।

भावी दम्पति के कुण्डलियों में राशिश मैत्रि दोष प्रभावी नहीं है।

गण कूट की विवेचना –

गण कूट की उपस्थिति, भावी दम्पति के चरित्र और उनके स्वभाव के सामन्जस्य को दर्शाता है और प्रौढ़ करता है। गण कूट के अनुपस्थित होने पर भावी दम्पति के स्वभाव और चरित्र में भिन्नता हो सकती है।

वर का गण मनुष्य है, वधु का गण मनुष्य है। गण कूट का पूर्ण गुण 6 है। वर और वधु के गण का मिलान करने पर 6 गुण प्राप्त हुआ है।

भावी दम्पति के कुण्डलियों में गण दोष प्रभावी नहीं है।

राशि कूट की विवेचना –

राशि (भ) कूट, संतान के जन्म से परिवार की वृद्धि को इंगित करता है। कुछ शास्त्रों केअनुसार यह कूट भावी वर और वधु के परिवार के बीच के सुखद संबंध को दर्शाता है। माधवाचार्य के अनुसार, यह कूट धननाश, जननाश, दुख, झगडे और भावी दम्पति केविचारों में मतैक्य इत्यादि की ओर भी इशारा करता है।

वर की राशि मीन है, वधु की राशि कुम्भ है। राशि कूट (भकूट) का पूर्ण गुण 7 है। वर और वधु के राशि कूट (भकूट) का मिलान करने पर 0 गुण प्राप्त हुआ है।

भावी दम्पति के कुण्डलियों में राशि (भकूट) दोष प्रभावी है, परन्तु राशि (भकूट) दोष का परिहार उपस्थित है, जो कि निम्न हैं –

वर और वधु के नवमांशेश परस्पर मित्र–मित्र या मित्र–सम हैं।

द्विर्द्वादश दोष –

भावी दम्पति के कुण्डलियों द्विर्द्वादश दोष उपस्थित है, और द्विर्द्वादश दोष का परिहार उपस्थितहै, जो कि निम्न हैं –

वर और वधु के नवमांशेश परस्पर मित्र–मित्र या मित्र–सम हैं।

नाड़ी कूट की विवेचना –

नाड़ी कूट की उपस्थिति भावी दम्पति के आध्यात्मिक क्षेत्र में एक दूसरे को सहयोग प्रदान करते हुए आगे बढ़ने की संभावनाओं को दर्शाता है। यह कूट सुनिश्चित करता है कि भावी दम्पति का स्वास्थ्य, उनकी उम्र और बच्चों की खुशियां कैसे सुरक्षित रह सकती हैं।

वर की नाड़ी आदि है, वधु की नाड़ी आदि है। नाड़ी कूट का पूर्ण गुण 8 है। वर और वधु के नाड़ी का मिलान करने पर 0 गुण प्राप्त हुआ है।

भावी दम्पति के कुण्डलियों में नाड़ी दोष प्रभावी है, परन्तु नाड़ी दोष का परिहार उपस्थित है, जो कि निम्न हैं –

वर और वधु के नक्षत्र एक हैं और राशियां भिन्न हैं।
वर और वधु के नक्षत्र एक हैं और नक्षत्र–चरन भिन्न हैं।
वर और वधु की कुण्डली के मध्य नाड़ी पादवेध नहीं है।

वर की जन्मकुण्डली का ज्योतिषीय विवेचन

(ये सेक्शन केवल विद्वान ज्योतिषीयों के लिए बनाया गया है। विद्वान ज्योतिषीयों से आग्रह है कि इसका प्रींट किसी भी हाल में आमजन को नहीं देना है। इस भाग में दाम्पत्य जीवन से संबंधित बहुत सारी युतियों की जाँच की गई है, इसे अपने विवेकानुसार ही आमजन को बताया जाना चाहिए।)

वर की जन्मकुण्डली में स्वास्थ्य/शिक्षा/भाग्य/संतान सुख और दीर्घायु से संबंधित शुभ योगों की जाँच –

आपकी जन्म कुण्डली में स्थित पहले भाव का स्वामी बली/शक्तिशाली है, पहले भाव पर कोई दूषित प्रभाव नहीं है एवं केन्द्र में शुभ ग्रह विराजमान है। आपका स्वास्थ्य जीवन पर्यन्त उत्तम बना रहेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी जल तत्व प्रधान ग्रह होकर बली है तथा पहले भाव के स्वामी के साथ शुभ ग्रहों की युति है। इसलिए आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी कोई शुभ ग्रह है, अर्थात् बुध, गुरु अथवा शुक्र है तथावह जल तत्व प्रधान राशि के नवांश में स्थित है। अतः आप शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं बलिष्ठहोंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी उच्च राशि, स्व राशि या मित्र राशि में उपस्थित है एवंपहले भाव पर शुभ ग्रहों का प्रभाव है। आपका शारीरिक स्वास्थ्य बढ़िया रहेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी केन्द्र, त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में उच्च राशि, मित्र राशि अथवा स्व राशि में उपस्थित है। आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी किसी शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट है। आपकी आयुलंबी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि उच्च राशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में उपस्थित है। आप दीर्घायु होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी उच्च राशि में स्थित है अथवा केन्द्र में उपस्थित है। आपकी आयु लम्बी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी बली/शक्तिशाली होकर तीसरे, ग्यारहवें अथवा केन्द्र में स्थित है। आपकी आयु लम्बी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र नवांशेश एवं चंद्र लग्न से अष्टम भाव के नवांशेश परस्पर मित्र हैं। आपमध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

जन्मकुण्डली में गुरु केन्द्र अथवा त्रिकोण में उपस्थित है। आप बुद्धिमान होंगे एवं आपको उचित

शिक्षा भी मिलेगी।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु पांचवें भाव में विद्यमान है। आप तीव्र स्मृति वाले होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले एवं पांचवें भाव के स्वामी की शुभ ग्रह से युति है अथवा उन पर शुभग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव के स्वामी एवं पांचवें भाव के स्वामी में राशि परिवर्तन होने के योग हैं। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

वर की जन्मकुण्डली में विशिष्ट योगों की जाँच –

आपकी जन्मकुण्डली में पहला भाव एवं पहले भाव का स्वामी दोनों ही शक्तिशाली हैं। आप कर्मठ, साहसी, पराक्रमी एवं उद्यमशील व्यक्ति होंगे एवं अपने कार्यों में सफलता हासिल करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र लग्न से बारहवें या गुरु से दसवें या बारहवें भाव में उपस्थित है। आपको अपने जीवन में सुख–समृद्धि, धन–वैभव सब कुछ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे एवं पांचवें भाव के स्वामी में राशि या नक्षत्र परिवर्तन हो रहा है अथवादोनों पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, नौवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में एक साथ विद्यमान हैं। आपको सुख, समृद्धि, धन, यश, ख्याति, भाग्य, लंबी आयु एवं सत्ता सुख प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी अथवा शुक्र नीच नवांश में स्थित है। आपका विवाह खूबसूरत कन्या से नहीं हो सकता है तथा साथ ही वे रोगग्रस्त, कटु वचन बोलने वाली एवं कर्कशस्वभाव की हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें और सातवें भाव के स्वामी के मध्य दृष्टि संबंध है अथवा राशि परिवर्तन योग है। आपके प्रेम विवाह की संभावना अधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले एवं पांचवें भाव के स्वामी अथवा पहले एवं नौवें भाव के स्वामी की युति है अथवा उनमें राशि परिवर्तन हो रहा है अथवा दोनों की एक–दूसरे पर दृष्टि पड़ रही है। आपके प्रेम विवाह करने की संभावना अधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में कलत्रकारक शुक्र पाप ग्रहों से युक्त है। संभावना है कि आप दो विवाह करसकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र की युति किसी शुभ ग्रह के साथ है तथा सातवें भाव के स्वामी की युति किसी पाप ग्रह के साथ है। संभावना है कि आप दो विवाह कर सकते हैं।

वर की जन्मकुण्डली में स्वास्थ्य/दरिद्रता/अल्पायु/संतानहीनता से संबंधित अशुभ योगों की जाँच –

आपकी जन्मकुण्डली में मिथुन, कर्क अथवा मीन राशि के नवांश में चंद्रमा उपस्थित है एवं उस पर मंगल एवं शनि की दृष्टि पड़ रही है। आपको कुष्ठ रोग से पीड़ित होने की संभावना अधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी पहले, दूसरे, पांचवें या बारहवें भाव में उपस्थित है। आपको संतान की प्राप्ति में कठिनाइयां हो सकती हैं या संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव पर मंगल या शुक्र की दृष्टि नहीं है। आपको संतान की प्राप्ति में कठिनाइयां हो सकती हैं या संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न से आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में अथवा किसी एक केंद्र भाव में उपस्थित है तथा वह उच्च राशि में स्थित नहीं है एवं ना ही वह अपनी राशि में स्थित है और नाही अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः सामान्यतः ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ बली प्रतिरोधी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो संभवतः 28वें वर्ष की आयु के आस–पास आपके स्वास्थ्य व सुख के कारण आपके घर–परिवार के लोग चिन्तित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा से आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में अथवा किसी एक केंद्र भावमें उपस्थित है तथा वह उच्च राशि में स्थित नहीं है एवं अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। अतः ऐसी ग्रह स्थिति सामान्यतः आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डलीमें कुछ शक्तिशाली प्रतिरोधी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको 28वें वर्ष की आयु के आस–पास आपके स्वास्थ्य और सुख के कारण आपके पारिवारिक जन चिंतित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल अथवा शनि में से कोई भी उच्चस्थ नहीं है और ना ही अपनी राशि मेंस्थित है। इन दोनों में से कोई भी ग्रह पहले भाव का स्वामी नहीं है। इसके अतिरिक्त मंगल औरशनि या तो चंद्र राशि में स्थित हैं अथवा उनकी दृष्टि चंद्र राशि पर पड़ रही है। अतः सामान्य दृष्टि से यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ शक्तिशाली प्रतिरोधी प्रभाव उपस्थित नहीं है, तो संभवतः 26वें या 29वें वर्ष की आयु के आस–पास आपका स्वास्थ्य और सुख आपके परिवार के लिए चिन्ता का कारण हो सकता है। इसके अतिरिक्त आप कुछ गंभीर परेशानियों में भी पड़ सकते हैं, जिनसे संभवतः आपको काफी लम्बे समय तक जूझना पड़ सकता है।

वर की जन्मकुण्डली में विशिष्ट अशुभ योगों की जाँच –

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र एवं शनि एक दूसरे से छठे व आठवें भाव में स्थित हैं। आप आजीवनयौन संबंध स्थापित करने में असमर्थ हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे अथवा चौथे भाव में दूसरे भाव का स्वामी उपस्थित है। संभावना है कि आपका शारीरिक संबंध किसी अन्य स्त्री के साथ भी हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले एवं सातवें भाव के स्वामी की युति है अथवा एक–दूसरे पर उनकी दृष्टि पड़ रही है। आपका अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री के साथ भी संबंध होने की संभावना

है।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा शासित राशि में स्थित है तथा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ भी स्थित है या इस पर उसकी दृष्टि पड़ रही है। जबकि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह इसके साथ स्थित नहीं है और ना ही इस पर उसकी दृष्टि है। इसके अतिरिक्त बुध या शनि हो कि उच्च राशि में अथवा अपनी राशि में उपस्थित नहीं है, लग्न से सातवेंभाव में विद्यमान है। सामान्य दृष्टि यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकीकुण्डली में कुछ शक्तिशाली संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका निजी जीवन अधिक अच्छा नहीं हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप आपका वैवाहिक जीवन भी अधिक खुशहालनहीं हो सकता है।

आपकी कुण्डली में दो घोर अशुभ ग्रह मंगल और शनि अपनी स्थिति और/या दृष्टि के द्वारा चंद्र–राशि को प्रभावित कर रहे हैं। इन दोनों में से कोई भी ग्रह उच्च राशि में अथवा अपनी राशि में अथवा अपने नक्षत्र में उपस्थित नहीं है। अतः ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप अपनी तीव्र भावनाओं पर उचित नियंत्रण रख पाने में समर्थ नहीं होंगे। जिसके फलस्वरूप आप मानसिक रूप से अशांत व तनावग्रस्त रहेंगे एवं संभवतः आपके रिश्तों पर भी अत्यधिक प्रतिकूल पड़ेगा। इससे आपके दाम्पत्य जीवन की सुख–शांति भी पूरी तरह नष्ट हो सकती है। अपने रिश्तों में मधुरता लानेके लिए आपको अपनी तीव्र भावनाओं पर नियंत्रण रखने का प्रयत्न करना चाहिए।

वर्तमान में आप शुक्र की विंशोत्तरी दशा से गुजर रहे हैं। सामान्यतः दशा की अन्तिम अवधि अपने नैसर्गिक कारकत्व के संदर्भ में कुछ प्रतिकूल परिणाम देती है। चूंकि शुक्र विवाह एवं वैवाहिक जीवन में मधुरता का नैसर्गिक कारक ग्रह है। इसलिए यदि आप पहले से विवाहित हैं, तो आपको वैवाहिक जीवन में अपने जीवन साथी के साथ दिनांक 01/12/2037 से 01/12/2038 तक कीअवधि के दौरान कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। चूंकि आपकी कुण्डली में शुक्रनीचस्थ अथवा अस्त अथवा ग्रसित अथवा अशुभ ग्रहों से पीड़ित है। इसलिए समस्याएं बहुत गंभीर हो सकती हैं।

वधु की जन्मकुण्डली का ज्योतिषीय विवेचन

(ये सेक्शन केवल विद्वान ज्योतिषीयों के लिए बनाया गया है। विद्वान ज्योतिषीयों से आग्रह है कि इसका प्रींट किसी भी हाल में आमजन को नहीं देना है। इस भाग में दाम्पत्य जीवन से संबंधित बहुत सारी युतियों की जाँच की गई है, इसे अपने विवेकानुसार ही आमजन को बताया जाना चाहिए।)

वधु की जन्मकुण्डली में स्वास्थ्य/शिक्षा/भाग्य/संतान सुख और दीर्घायु से संबंधित शुभ योगों की जाँच –

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव में कोई शुभ राशि स्थित है एवं लग्न का नवांशेश जल राशि में स्थित है। अतः आपका शरीर स्वस्थ एवं बलिष्ठ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव के स्वामी एवं नौवें भाव के स्वामी में राशि परिवर्तन हो रहा है अथवा पहले एवं नौवें भाव के स्वामी पहले अथवा नौवें भाव में एक साथ उपस्थित हैं। आपको अपने भाग्य का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी केन्द्र, त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में उच्च राशि, मित्र राशि अथवा स्व राशि में उपस्थित है। आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र–गुरू–शुक्र मुद्रिका योग बना रहा है। इस योग में जन्म होने के कारणआप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी किसी शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट है। आपकी आयुलंबी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र लग्न के स्वामी एवं चंद्र लग्न से आठवें भाव के स्वामी मित्र हैं। आपकी आयु लंबी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी केन्द्र अथवा त्रिकोण में विराजमान है। आप विलक्षण प्रतिभा वाली व्यक्ति होंगी एवं आपको विभिन्न विषयों का ज्ञान होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु का नवांशधिपति केंद्र में स्थित है। आपको अपने जीवन में पुत्र की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें एवं पहले भाव के स्वामी स्त्री राशि और स्त्री राशि के ही नवांश में स्थित हैं। आपको पुत्री की प्राप्ति होगी।

वधु की जन्मकुण्डली में विशिष्ट योगों की जाँच –

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे एवं दसवें भाव के स्वामी में राशि अथवा नक्षत्र परिवर्तन हो रहा है। इसलिए आप सरल हृदय वाली एवं मधुर स्वभाव वाली महिला होंगी। आपमें किसी बात का अभिमान नहीं होगा तथा आपका आचरण सबके साथ विनम्र होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का त्रिशांश गुरु का है, चाहे वह लग्न किसी भी राशि का है। आप मृदुभाषिणी, सौम्य स्वभाव वाली, सद्गुणी एवं पति के प्रिये होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव में चर राशि स्थित है तथा सातवें भाव का स्वामी भी चर राशि के नवांश में स्थित है। आपके विवाहोपरांत आपके पति सदैव परदेश अथवा आपसे दूर निवास कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव में राहु स्थित है। आपका विवाह छल–कपट करने वाले तथा नीच या घृणित कार्य करने वाले व्यक्ति से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी की उच्च राशि में राहु अथवा केतु उपस्थित हैं। आप प्रेम विवाह कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव में राहु स्थित है। संभवतः आप प्रेम विवाह कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले एवं सातवें भाव के स्वामी में राशि परिवर्तन हो रहा है। आप प्रेम विवाह कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले एवं पांचवें भाव के स्वामी अथवा पहले एवं नौवें भाव के स्वामी की युति है अथवा उनमें राशि परिवर्तन हो रहा है अथवा दोनों की एक–दूसरे पर दृष्टि पड़ रही है। आपके प्रेम विवाह करने की संभावना अधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें अथवा पांचवें भाव के स्वामी की युति नौवें भाव के स्वामी के साथ है। संभावना है कि आप प्रेम विवाह कर सकते हैं।

वधु की जन्मकुण्डली में स्वास्थ्य/दरिद्रता/अल्पायु/संतानहीनता से संबंधित अशुभ योगों की जाँच –

आपकी जन्मकुण्डली में मिथुन, कर्क अथवा मीन राशि के नवांश में चंद्रमा उपस्थित है एवं उस पर मंगल एवं शनि की दृष्टि पड़ रही है। आपको कुष्ठ रोग से पीड़ित होने की संभावना अधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी पहले, दूसरे, पांचवें या बारहवें भाव में उपस्थित है। आपको संतान की प्राप्ति में कठिनाइयां हो सकती हैं या संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव पर मंगल या शुक्र की दृष्टि नहीं है। आपको संतान की प्राप्ति में कठिनाइयां हो सकती हैं या संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती

है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल पहले भाव में स्थित है एवं सूर्य व शनि लग्न से केंद्र भाव में स्थित हैं। इन तीनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह उच्च राशि में स्थित नहीं है, ना ही अपनी राशि में स्थित है एवं ना ही अपने नक्षत्र में स्थित है। इसलिए ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल फलदायक साबित नहीं होगी। यदि आपकी कुण्डली में कुछ शक्तिशाली प्रतिरोधी प्रभावा मौजूद नहीं है जो लगभग 20वें वर्ष की आयु में आपके स्वास्थ्य एवं सुख के कारण आपके पारिवारिक जन चिन्तित होसकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा से आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में अथवा किसी एक केंद्र भावमें उपस्थित है तथा वह उच्च राशि में स्थित नहीं है एवं अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। अतः ऐसी ग्रह स्थिति सामान्यतः आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डलीमें कुछ शक्तिशाली प्रतिरोधी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको 28वें वर्ष की आयु के आस–पास आपके स्वास्थ्य और सुख के कारण आपके पारिवारिक जन चिंतित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न अथवा लग्न से केन्द्र भाव में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं हैजबकि लग्न से आठवें भाव में कम से कम एक ग्रह उपस्थित है– जो कि उच्चस्थ नहीं है और अपनी राशि या अपने नक्षत्र में भी स्थित नहीं है। अतः ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ शक्तिशाली प्रतिरोधी प्रभाव उपस्थित नहीं है, तो संभवतः 30वें वर्षकी आयु के आस–पास आपका स्वास्थ्य और सुख आपके परिवार के लिए चिन्ता का कारण हो सकता है।

वधु की जन्मकुण्डली में विशिष्ट अशुभ योगों की जाँच –

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव में मंगल की राशि अथवा नवांश स्थित है एवं उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। आपको योनि से संबंधित रोग होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी पाप युक्त है तथा सातवें भाव में राहु अथवा केतु स्थित है और उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले, चौथे, सातवें, आठवें अथवा बारहवें भाव में मंगल स्थित है एवं पाप दृष्ट है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु अथवा शुक्र आठवें भाव में उपस्थित है। आपको मृत संतान उत्पन्न होने की संभावना हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल, राहु एवं सूर्य पहले भाव में स्थित हैं तथा दूसरे भाव में शुक्र उपस्थित है। आपके पति की आयु आपकी आयु से कम हो सकती है। पति से वियोग के बाद आपकी दूसरी शादी होने की भी कुछ संभावना है।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी अस्त (सूर्य की समीपता के कारण) है या नीच भंग न होने के कारण नीचस्थ है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपके जीवनसाथी का नैतिक स्तर अधिक उंचा नहीं हो सकता है। वह आपसे कोई भी महत्वपूर्ण बात चतुराई से छिपा सकती हैं। चूंकि उनके अनुमान व कल्पना से पूर्व ही सच्चाई सामने आ सकती है, जिसका उन्हें सामना करना पड़ सकता है एवं ऐसी परिस्थिति में आप बहुत आहत हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह द्वारा शासित राशि में स्थित है तथा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ भी स्थित है या इस पर उसकी दृष्टि पड़ रही है। जबकि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह इसके साथ स्थित नहीं है और ना ही इस पर उसकी दृष्टि है। इसके अतिरिक्त बुध या शनि हो कि उच्च राशि में अथवा अपनी राशि में उपस्थित नहीं है, लग्न से सातवेंभाव में विद्यमान है। सामान्य दृष्टि यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकीकुण्डली में कुछ शक्तिशाली संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका निजी जीवन अधिक अच्छा नहीं हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप आपका वैवाहिक जीवन भी अधिक खुशहालनहीं हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव के स्वामी के साथ ग्यारहवें भाव का स्वामी बैठा हुआ है या उसकी सातवें भाव के स्वामी पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि इनमें से कोई भी ग्रह उच्च राशि में अथवा अपनी राशि में स्थित नहीं है। सामान्यतः यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकीकुण्डली में कुछ शक्तिशाली संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका निजी जीवन बहुत अधिक अच्छा नहीं हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप आपका वैवाहिक जीवन भी संभवतः अधिक खुशहाल व सुखमय नहीं हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी आठवें भाव में स्थित है एवं आठवें भाव का स्वामी सातवें भाव में स्थित है। जबकि आपका लग्न मेष या तुला नहीं है (अतः अष्टमेश लग्नेश नहीं है)। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए कदापि अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके जीवनसाथी को विवाह के कुछ समय पश्चात ही स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। उनको प्राकृतिक रूप से रक्त स्राव होने से अथवा शल्य क्रिया के कारण रक्त की कमी से अधिक परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त, आपका वैवाहिक जीवन अधिक सुखमय व खुशहाल नहीं होगा। साथ ही आपके वैवाहिक जीवन की अवधि भी संभवतः अधिक लम्बी नहीं होगी।

मांगलिक दोष (स्वभाव) का मिलान

भावी दम्पति के कुण्डलीयों में मंगल के स्थिति के आधार पर दम्पति के बुनियादी स्वभाव (क्रोध, उग्रता आदि) का मेलापन और निष्कर्ष।

Sample B	Sample G
कुण्डली में मांगलिक दोष से संबंधित कोई भी योग नहीं है।	कुण्डली में मंगल लग्न और चन्द्रमा या शुक्र से पहले, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में है।
मंगल दशा (01:12:2054 से 01:12:2061 तक) उम्र (79.9 वर्ष से 86.9 वर्ष तक)	मंगल दशा (27:01:2069 से 27:01:2076 तक) उम्र (92.2 वर्ष से 99.2 वर्ष तक)
0%	60%
पूर्णांक : 10	
प्राप्तांक : 0	

भावी दम्पतियों की कुण्डलियों में मांगलिक दोष की मात्रा का अन्तर 20 प्रतिशत से अधिक है। किसी विद्वान ज्योतिषी से सलाह के उपरान्त ये संबंध स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि मांगलिक दोष कुण्डली मिलान की पूरी प्रक्रिया का एक अंग है।

चन्द्र राशि (मानसिक/भावनात्मक) का मिलान

भावी दम्पति के कुण्डलीयों में राशि (चन्द्रराशि), राश्याधिपति और वश्य के आधार पर मनोवैज्ञानिक मिलान और निष्कर्ष।

Sample B	Sample G
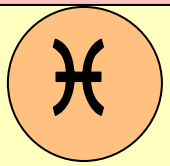	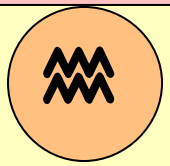
चन्द्र राशि : मीन	चन्द्र राशि : कुम्भ
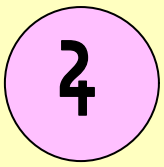	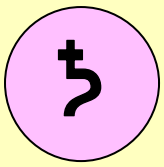
चन्द्र राश्याधिपति : गुरू	चन्द्र राश्याधिपति : शनि

चन्द्र राशि मिलान

वर–वधू की कुण्डली में उपस्थित राशि कूट पुत्र संतान के माध्यम से परिवार की उन्नति को सुनिश्चित करता है। वधू का अपने ससुराल पक्ष के साथ तथा अपनी बहु के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बना रहता है। जबकि वधू की जन्म राशि से वर की जन्म राशि प्रतिकूल अवस्था में स्थित होने पर धन व संतान की हानि, रोगादि में वृद्धि, कलह–क्लेश, मतभेद व लड़ाई–झगड़े, संबंध विच्छेद आदि की संभावना हो सकती है।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 2.5**

राश्याधिपति मिलान

वर व वधू की कुण्डली में उपस्थित राश्याधिपति युगल दम्पति की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह वर–वधू की व्यक्तिगत मानसिक अभिवृत्ति एवं उनके मध्य परस्पर स्नेह को भी दर्शाता है।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 2.5**

वश्य मिलान

वर–वधू की कुण्डली में वश्य कूट की उपस्थिति उनके मध्य परस्पर प्रेम व लगाव को सुनिश्चित करता है। यह वंश वृद्धि का सूचक है। यह वर व वधू का एक दूसरे को अपने आकर्षण से नियंत्रित करने की शक्ति या एक दूसरे को अपने अधीन रखने की क्षमता को दर्शाता है।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 0**

नक्षत्रों के आधार पर मिलान

Sample B	Sample G
	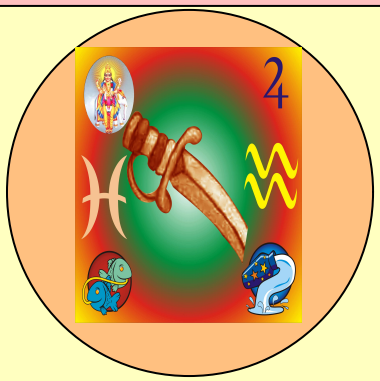
चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)	चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

वेध (बाधा / प्रतिरोध) मिलान

वर व वधू की कुण्डली में वेध कूट की उपस्थिति युगल दम्पत्ति के जीवन में आने वाली सभी प्रकार की विघ्न–बाधा, आघात, आक्रमण, यातना व वेध आदि को रोकता है एवं उनकी रक्षा करता है तथा एक सुख–शांतिपूर्ण व समृद्धशाली जीवन को सुनिश्चित करता है।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 5**

दिन (मिज़ाज / ब्यवहार) मिलान

वर व वधू की कुण्डली में उपस्थित दिन कूट यह सुनिश्चित करता है कि वर व वधु स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे, उनका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा जीवन की सभी सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे। दिन कूट की अनुपस्थिति में वर व वधू के मध्य वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं, जो दिन–प्रतिदिन बढ़ सकते हैं, जिससे परस्पर विवाद व तकरार उत्पन्न हो सकता है तथा उनके मध्य परस्पर सहयोग की भावना का अभाव हो सकता है।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 0**

स्त्री–दीर्घ (मनोवैज्ञानिक) मिलान

स्त्री दीर्घ– स्त्री दीर्घ कूट की उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है, कि वधु को वैधव्य की स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा। वर–वधू का संबंध दीर्घकालिक होगा, जिसमें सुदृढ़ता, घनिष्ठता व एकजुटता सदैव बनी रहेगी। दम्पत्ति के जीवन में उन्नति होगी।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 0**

महेन्द्र (ममत्व / अपनापन) मिलान

वर–वधू की कुण्डली में उपस्थित महेन्द्र कूट यह सुनिश्चित करता है कि वर व वधू के मध्य दीर्घकालिक संबंध होगा तथा उनको संतान की प्राप्ति होगी। युगल दम्पत्ति की संतान योग्य, उत्तम और समृद्धशाली होगी।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 0**

नक्षत्रों के आधार पर मिलान

Sample B	Sample G
	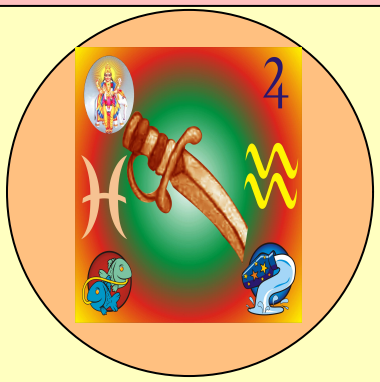
चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)	चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

गण मिलान

वर व वधू की कुण्डली में उपस्थित गण कूट यह सुनिश्चित करता है कि उनका दाम्पत्य जीवन परस्पर अनुकूल होगा तथा उनके विचार, मिजाज और गुणों में समरूपता होगी। गण कूट से दम्पत्ति की चारित्रिक विशेषताओं का विचार किया जाता है।

पूर्णांक : 6 प्राप्तांक : 6

योनि (शारिरिक) मिलान

वर–वधू की कुण्डली में उपस्थित योनि कूट उनके मध्य यौन संबंध की अनुकूलता को सूचित करता है।

पूर्णांक : 5 प्राप्तांक : 5

रज्जु (आध्यात्मिक) मिलान

वर व वधू की कुण्डली में रज्जु कूट की उपस्थिति अपार खुशी, परम सुख और आनन्द की प्राप्ति को सुनिश्चित करता है। यह वैधव्य योग से बचाता है एवं वधू को लम्बे समय तक पति का सानिध्य व सौभाग्य प्रदान करता है।

पूर्णांक : 6 प्राप्तांक : 0

नाड़ी मिलान

वर व वधू की कुण्डली में नाड़ी कूट की उपस्थिति दम्पत्ति की दीर्घायु, संतान की प्रसन्नता व स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है। यह युगल दम्पत्ति द्वारा आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर कार्य करने की योग्यता को दर्शाता है। नाड़ी कूट दम्पत्ति की एकता का उनके संतान पर पड़ने वाले प्रभाव को भी दर्शाता है।

पूर्णांक : 6 प्राप्तांक : 0

ग्रहों की अशुभता का मिलान (कर्म और चुनौतियाँ)

भावी दम्पति की कुण्डली में सभी अशुभ ग्रहों के अशुभता के कुल योग के आधार पर शुभ/अशुभ कर्मो का मिलान और विश्लेषण

Sample B

ग्रह (राशि में)	लग्न से गणना	चन्द्र से गणना	शुक्र से गणना
सूर्य (मकर)	चतुर्थ, अधिशत्रु प्राप्तांक : 15	एकादश प्राप्तांक : 0	प्रथम, अधिशत्रु प्राप्तांक : 60
शनि (मिथुन)	नवम् प्राप्तांक : 0	चतुर्थ प्राप्तांक : 0	षष्टम् प्राप्तांक : 0
राहु (वृश्चिक)	द्वितीय, नीचस्थ प्राप्तांक : 32	नवम् प्राप्तांक : 0	एकादश प्राप्तांक : 0
केतु (वृष)	अष्टम्, नीचस्थ प्राप्तांक : 128	तृतीय प्राप्तांक : 0	पंचम् प्राप्तांक : 0
मंगल (धनु)	तृतीय प्राप्तांक : 0	दशम् प्राप्तांक : 0	द्वादश, अधिमित्र प्राप्तांक : 9
योग :	175	0	69

Sample G

ग्रह (राशि में)	लग्न से गणना	चन्द्र से गणना	शुक्र से गणना
सूर्य (तुला)	प्रथम, नीचस्थ प्राप्तांक : 64	नवम् प्राप्तांक : 0	द्वादश, नीचस्थ प्राप्तांक : 16
शनि (कर्क)	दशम् प्राप्तांक : 0	षष्टम् प्राप्तांक : 0	नवम् प्राप्तांक : 0
राहु (तुला)	प्रथम, अधिमित्र प्राप्तांक : 24	नवम् प्राप्तांक : 0	द्वादश, अधिमित्र प्राप्तांक : 6
केतु (मेष)	सप्तम् प्राप्तांक : 0	तृतीय प्राप्तांक : 0	षष्टम् प्राप्तांक : 0
मंगल (तुला)	प्रथम, मित्र प्राप्तांक : 48	नवम् प्राप्तांक : 0	द्वादश, मित्र प्राप्तांक : 12
योग :	136	0	34

Total for - Sample B : 244

Total for - Sample G : 170

पूर्णांक : 12 प्राप्तांक : 6

ग्रहदशा मिलान

भावी दम्पति की कुण्डली में मिलान के समय में प्रभावी दशा और दशापति के आधार पर भविष्य में दाम्पत्य जीवन में आने वाली बाधाओं का विश्लेषण

Sample B	Sample G

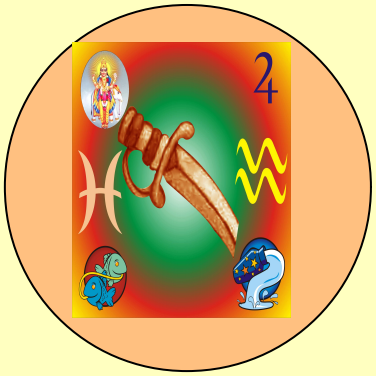

चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)

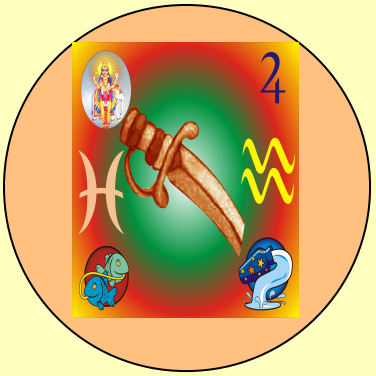

चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:30:31) : गुरू : 0 व 10 मा 13 दि	
ग्रह दशा	से ———— तक
गुरू	18:01:1975 - 30:11:1975
शनि	01:12:1975 - 30:11:1994
बुध	01:12:1994 - 30:11:2011
केतु	01:12:2011 - 30:11:2018
शुक्र	01:12:2018 - 30:11:2038
सूर्य	01:12:2038 - 30:11:2044
चन्द्र	01:12:2044 - 30:11:2054
मंगल	01:12:2054 - 30:11:2061
राहु	01:12:2061 - 30:11:2079

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:30:31) : गुरू : 13 व 2 मा 25 दि	
ग्रह दशा	से ———— तक
गुरू	02:11:1976 - 26:01:1990
शनि	27:01:1990 - 26:01:2009
बुध	27:01:2009 - 26:01:2026
केतु	27:01:2026 - 26:01:2033
शुक्र	27:01:2033 - 26:01:2053
सूर्य	27:01:2053 - 26:01:2059
चन्द्र	27:01:2059 - 26:01:2069
मंगल	27:01:2069 - 26:01:2076
राहु	27:01:2076 - 26:01:2094

भावी दम्पति की कुण्डली में वर्तमान महादशाओं के आरम्भ की अवधि में 1 वर्ष से अधिक का अन्तर है और दोनों कुण्डलियों में वर्तमान महादशा अधिपति एक दूसरे से अशुभ स्थानों में (2/12 अथवा 6/8) स्थित नहीं है। यह महादशा अवधि के पूर्ण मिलान का सूचक है।

पूर्णांक : 10 प्राप्तांक : 10

ग्रहों की पारस्परिक स्थिति का विश्लेषण

भावी दम्पति की कुण्डलीयों में कारक ग्रहों जैसे सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, गुरू और शुक्र इत्यादि का भावी दम्पति की कुण्डलीयों में पारस्परिक स्थिति के आधार पर एक दूसरे के बीच के समझ और पारस्परिक सहयोग का मिलान और विश्लेषण।

ज्योतिष में सूर्य अच्छे भाग्य, धन–सम्पति, स्वास्थ्य, आत्मा और जीवन शक्ति का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में चन्द्रमा प्रजनन क्षमता, आयु, अच्छे स्वास्थ्य, जीवन में आगे बढ़ने की तीव्र जीजिविषा, सोचने की क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में मंगल वैवाहिक संबंध, शारिरिक इच्छाओं, भावनात्मक संबंधों और यौन इच्छाशक्ति का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में गुरू साधारण तौर पर जीवन में मिलने वाली सफलता, वैवाहिक सुख, संतान और समृद्धि का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में शुक्र प्रेम संबंध, मनोभाव और जीवन साथी का कारक ग्रह है।

ग्रह	Sample B	Sample G	स्थिति	प्राप्तांक
सूर्य	मकर (चतुर्थ)	तुला (प्रथम) नीचस्थ	4/10	2
चन्द्र	मीन (षष्टम्)	कुम्भ (पंचम्)	2/12	0
मंगल	धनु (तृतीय)	तुला (प्रथम)	3/11	2
गुरू	कुम्भ (पंचम्)	वृष (अष्टम्)	4/10	2
शुक्र	मकर (चतुर्थ)	वृश्चिक (द्वितीय)	3/11	2

नोट : यदि कोई ग्रह उच्च का है तो ये दोष नज़रंदाज भी किया जा सकता है परन्तु अगर नीच का है तो दोष की मात्रा कई गुना बढ़ जाता है।

पूर्णांक : 10 प्राप्तांक : 8

विवाह मेलापन समग्र (सम्पूर्ण) – वर/वधु

कूट विवरण	Sample	Sample	पूर्णांक	प्राप्तांक
भाग–1 : वर–वधु के बीच मानसिक सांमजस्य				
चन्द्र राशि	मीन	कुम्भ	5	2.5
चन्द्र राश्याधिपति	गुरू	शनि	5	2.5
वश्य	मीन	कुम्भ	5	0
स्त्रीदीर्घ	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	5	0
	Total :	**(25.0)**	**20**	**05.0**
भाग–2 : वर–वधु के बीच में भौतिक और संसारिक सुख का अनुभव				
दिन	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	5	0
महेन्द्र	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	5	0
वेध	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	5	5
योनि	शेर (पु0)	शेर (पु0)	5	5
	Total :	**(50.0)**	**20**	**10.0**
भाग–3 : आध्यात्मिक स्तर पर वर–वधु के बीच तारतम्यता				
रज्जु	कटि रज्जु	कटि रज्जु	6	0
नाड़ी	वात	वात	6	0
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6
	Total :	**(33.3)**	**18**	**06.0**
भाग–4 : विवाह के अन्य महत्वपूर्ण कारकों का मिलान				
मांगलिक दोष (प्रतिशत)	0	60	**10**	**0**
अशुभ ग्रहों के दोष	244	170	**12**	**6**
दशा चक्र (विंशोत्तरी)	शुक्र (01:12:2018)	बुध (27:01:2009)	**10**	**10**
ग्रहों के पारस्परिक संबंन्ध	सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरू, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरू, शुक्र	**10**	**8**
	Total :	**(57.1)**	**42**	**24.0**

पूर्णांक	जरूरी	प्राप्तांक
100	45	45.0

कूट गणना के अनुसार (भाग–1) मानसिक सांमजस्य के स्तर पर वर/वधु के बीच तारतम्यता अनुपस्थित है। कूट गणना के अनुसार (भाग–3) आध्यात्मिक सुख के स्तर पर वर/वधु के बीच तारतम्यता अनुपस्थित है। हांलाकि ज्योतिष के सिद्धान्तो के आधार पर गुण मिलान का कुल योग विवाह के योग्य है, परन्तु पीछे गणना किए 4 कारकों में से एक या अधिक में मिलान अनुपस्थित है। आपको किसी विद्वान ज्योतिषी से विवेचना करवा कर ही विवाह की बात आगे बढ़ानी चाहिए।

चन्द्र राशि (मानसिक/भावनात्मक) का मिलान

गुरू/शिष्य के कुण्डलीयों में राशि (चन्द्रराशि), राश्याधिपति और वश्य के आधार पर मनोवैज्ञानिक मिलान और निष्कर्ष।

Sample B	Sample G
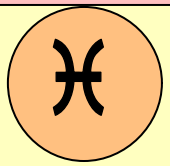	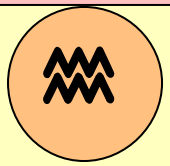
चन्द्र राशि : मीन	चन्द्र राशि : कुम्भ
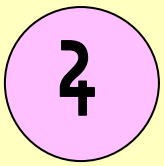	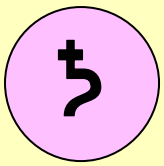
चन्द्र राश्याधिपति : गुरू	चन्द्र राश्याधिपति : शनि

चन्द्र राशि मिलान

गुरू/शिष्य की कुण्डली में उपस्थित राशि कूट गुरू के प्रति शिष्य के सम्मान और प्रेम को सुनिश्चित करता है। गुरू का शिष्य के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बना रहता है। जबकि जन्म राशि प्रतिकूल अवस्था में स्थित होने पर सम्मान और प्रेम में कमीद्ध कलह–क्लेश, मतभेद व लड़ाई–झगड़े, संबंध विच्छेद आदि की संभावना हो सकती है।

पूर्णांक : 8 **प्राप्तांक : 4**

राश्याधिपति मिलान

गुरू/शिष्य की कुण्डली में उपस्थित राश्याधिपति गुरू/शिष्य की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह गुरू/शिष्य की व्यक्तिगत मानसिक अभिवृत्ति एवं उनके मध्य परस्पर स्नेह और सम्मान को भी दर्शाता है।

पूर्णांक : 8 **प्राप्तांक : 4**

वश्य मिलान

गुरू/शिष्य की कुण्डली में वश्य कूट की उपस्थिति उनके मध्य परस्पर प्रेम, सम्मान व लगाव को सुनिश्चित करता है। यह गुरू/शिष्य का एक दूसरे को अपने आकर्षण से नियंत्रित करने की शक्ति या एक दूसरे को अपने अधीन रखने की क्षमता को दर्शाता है।

पूर्णांक : 8 **प्राप्तांक : 0**

नक्षत्रों के आधार पर मिलान

Sample B	Sample G
	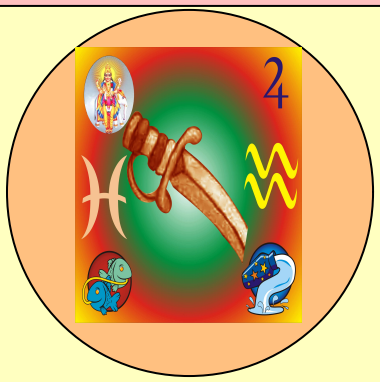
चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)	चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

गण मिलान

गुरू/शिष्य की कुण्डली में उपस्थित गण कूट यह सुनिश्चित करता है कि उनके बीच संबंध परस्पर अनुकूल होगा तथा उनके विचार, मिजाज और गुणों में समरूपता होगी। गण कूट से गुरू/शिष्य की चारित्रिक विशेषताओं का विचार किया जाता है।

पूर्णांक : 17 **प्राप्तांक : 17**

रज्जु (आध्यात्मिक) मिलान

गुरू/शिष्य की कुण्डली में रज्जु कूट की उपस्थिति अपार खुशी, परम सुख और आनन्द की प्राप्ति को सुनिश्चित करता है। यह अलगाव से बचाता है एवं शिष्य को लम्बे समय तक गुरू का सानिध्य व सौभाग्य प्रदान करता है।

पूर्णांक : 17 **प्राप्तांक : 0**

नाड़ी मिलान

गुरू/शिष्य की कुण्डली में नाड़ी कूट की उपस्थिति गुरू/शिष्य की दीर्घायु, प्रसन्नता व स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है। यह गुरू/शिष्य द्वारा आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर कार्य करने की योग्यता को दर्शाता है।

पूर्णांक : 18 **प्राप्तांक : 0**

ग्रहों की पारस्परिक स्थिति का विश्लेषण

भावी गुरू/शिष्य की कुण्डलीयों में कारक ग्रहों जैसे सूर्य, चन्द्रमा और गुरू इत्यादि का गुरू/शिष्य की कुण्डलीयों में पारस्परिक स्थिति के आधार पर एक दूसरे के बीच के समझ और पारस्परिक सहयोग का मिलान और विश्लेषण।

ज्योतिष में सूर्य अच्छे भाग्य, धन–सम्पति, स्वास्थ्य, आत्मा और जीवन शक्ति का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में चन्द्रमा प्रजनन क्षमता, आयु, अच्छे स्वास्थ्य, जीवन में आगे बढ़ने की तीव्र जीजिविषा, सोचने की क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में गुरू साधारण तौर पर जीवन में मिलने वाली सफलता, वैवाहिक सुख, संतान और समृद्धि का कारक ग्रह है।

ग्रह	Sample B	Sample G	स्थिति	प्राप्तांक
सूर्य	मकर (चतुर्थ)	तुला (प्रथम) नीचस्थ	4/10	8
चन्द्र	मीन (षष्टम्)	कुम्भ (पंचम्)	2/12	0

गुरू	कुम्भ (पंचम्)	वृष (अष्टम्)	4/10	8

नोट : यदि कोई ग्रह उच्च का है तो ये दोष नज़रंदाज भी किया जा सकता है परन्तु अगर नीच का है तो दोष की मात्रा कई गुना बढ़ जाता है।

पूर्णांक : 24 प्राप्तांक : 16

मेलापन समग्र (सम्पूर्ण) – गुरू/शिष्य

कूट विवरण	Sample	Sample	पूर्णांक	प्राप्तांक
भाग–1 : गुरू/शिष्य के बीच मानसिक सांमजस्य				
चन्द्र राशि	मीन	कुम्भ	8	4
चन्द्र राश्याधिपति	गुरू	शनि	8	4
वश्य	मीन	कुम्भ	8	0
		Total : (33.3)	**24**	**08.0**
भाग–2 : आध्यात्मिक स्तर पर गुरू/शिष्य के बीच तारतम्यता				
रज्जु	कटि रज्जु	कटि रज्जु	17	0
नाड़ी	वात	वात	18	0
गण	मनुष्य	मनुष्य	17	17
		Total : (32.7)	**52**	**17.0**
भाग–3 : विवाह के अन्य महत्वपूर्ण कारकों का मिलान				
ग्रहों के पारस्परिक संबंन्ध	सूर्य, चन्द्र, गुरू	सूर्य, चन्द्र, गुरू	**24**	**16**
		Total : (66.7)	**24**	**16.0**

पूर्णांक	जरूरी	प्राप्तांक
100	62	41.0

कूट गणना के अनुसार (भाग–1) मानसिक सांमजस्य के स्तर पर गुरू/शिष्य के बीच तारतम्यता अनुपस्थित है। कूट गणना के अनुसार (भाग–2) आध्यात्मिक सांमजस्य के स्तर पर गुरू/शिष्य के बीच तारतम्यता अनुपस्थित है। ज्योतिष के सिद्धान्तो के आधार पर मिलान का कुल योग गुरू/शिष्य संबंन्ध के योग्य नहीं है। आपको किसी विद्वान ज्योतिषी से विवेचना करवा कर ही गुरू/शिष्य के इस संबंन्ध को स्थापित करना चाहिए।

मांगलिक दोष (स्वभाव) का मिलान

भावी ब्यापारिक साझीदारों के कुण्डलीयों में मंगल के स्थिति के आधार पर
साझीदारों के बुनियादी स्वभाव (क्रोध, उग्रता आदि) का मेलापन और निष्कर्ष।

Sample B	Sample G
कुण्डली में मांगलिक दोष से संबंधित कोई भी योग नहीं है।	कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, सातवें या आठवें भाव में है।
मंगल दशा (01:12:2054 से 01:12:2061 तक) उम्र (79.9 वर्ष से 86.9 वर्ष तक)	मंगल दशा (27:01:2069 से 27:01:2076 तक) उम्र (92.2 वर्ष से 99.2 वर्ष तक)
0%	100%
पूर्णांक :	14
प्राप्तांक :	0

भावी ब्यापारिक साझीदारों की कुण्डलियों में मांगलिक दोष की मात्रा का अन्तर 20 प्रतिशत से अधिक है। किसी विद्वान ज्योतिषी से सलाह के उपरान्त ये संबंध स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि मांगलिक दोष कुण्डली मिलान की पूरी प्रक्रिया का एक अंग है।

चन्द्र राशि (मानसिक/भावनात्मक) का मिलान

भावी साझीदारों के कुण्डलीयों में राशि (चन्द्रराशि) और राश्याधिपति के आधार पर मनोवैज्ञानिक मिलान और निष्कर्ष।

Sample B	Sample G
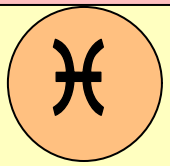	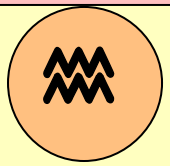
चन्द्र राशि : मीन	चन्द्र राशि : कुम्भ
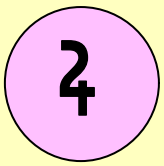	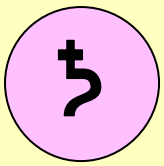
चन्द्र राश्याधिपति : गुरू	चन्द्र राश्याधिपति : शनि

चन्द्र राशि मिलान

भावी ब्यापारिक साझीदारों की कुण्डली में उपस्थित राशि कूट ब्यापार की उन्नति को सुनिश्चित करता है। साझीदारों में सौहार्दपूर्ण संबंध बना रहता है। जबकि साझीदारों की जन्म राशि प्रतिकूल अवस्था में स्थित होने पर धन की हानि, रोगादि में वृद्धि, कलह–क्लेश, मतभेद व लड़ाई–झगड़े, ब्यापारिक संबंध विच्छेद आदि की संभावना हो सकती है।

पूर्णांक : 9 **प्राप्तांक : 4.5**

राश्याधिपति मिलान

भावी ब्यापारिक साझीदारों की कुण्डली में उपस्थित राश्याधिपति साझीदारों की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह साझीदारों की व्यक्तिगत मानसिक अभिवृत्ति एवं उनके मध्य परस्पर स्नेह और सौहार्द को भी दर्शाता है।

पूर्णांक : 9 **प्राप्तांक : 4.5**

नक्षत्रों के आधार पर मिलान

Sample B	Sample G
	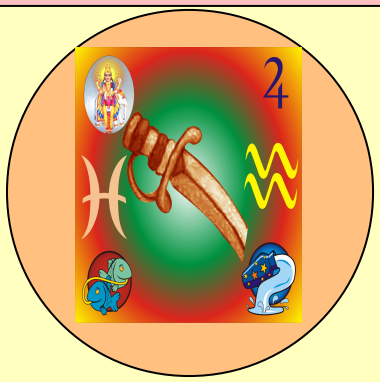
चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)	चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

वेध (बाधा / प्रतिरोध) मिलान

भावी साझीदारों की कुण्डली में वेध कूट की उपस्थिति साझीदारों के जीवन में आने वाली सभी प्रकार की विघ्न–बाधा, आघात, आक्रमण, यातना व वेध आदि को रोकता है एवं उनकी रक्षा करता है तथा एक सुख–शांतिपूर्ण व समृद्धशाली ब्यापारिक जीवन को सुनिश्चित करता है।

पूर्णांक : 9 **प्राप्तांक : 9**

दिन (मिज़ाज / ब्यवहार) मिलान

भावी साझीदारों की कुण्डली में उपस्थित दिन कूट यह सुनिश्चित करता है कि वो स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे, उनकी साझीदारी सुखमय होगी तथा जीवन की सभी सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे। दिन कूट की अनुपस्थिति में साझीदारों के मध्य वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं, जो दिन–प्रतिदिन बढ़ सकते हैं, जिससे परस्पर विवाद व तकरार उत्पन्न हो सकता है तथा उनके मध्य परस्पर सहयोग की भावना का अभाव हो सकता है।

पूर्णांक : 9 **प्राप्तांक : 0**

स्त्री–दीर्घ (मनोवैज्ञानिक) मिलान

स्त्री दीर्घ कूट की उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है, कि साझीदारों को अलगाव की स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा। साझीदारों का संबंध दीर्घकालिक होगा, जिसमें सुदृढ़ता, घनिष्ठता व एकजुटता सदैव बनी रहेगी। ब्यापार के क्षेत्र में उन्नति होगी।

पूर्णांक : 9 **प्राप्तांक : 0**

महेन्द्र (ममत्व / अपनापन) मिलान

भावी साझीदारों की कुण्डली में उपस्थित महेन्द्र कूट यह सुनिश्चित करता है कि साझीदारों के मध्य दीर्घकालिक संबंध होगा तथा उनको समृद्धशाली ब्यापारिक जीवन की प्राप्ति होगी।

पूर्णांक : 9 **प्राप्तांक : 0**

ग्रहदशा मिलान

भावी ब्यापारिक साझीदारों की कुण्डली में मिलान के समय में प्रभावी दशा और दशापति के आधार पर भविष्य में ब्यापारिक जीवन में आने वाली बाधाओं का विश्लेषण

Sample B	Sample G

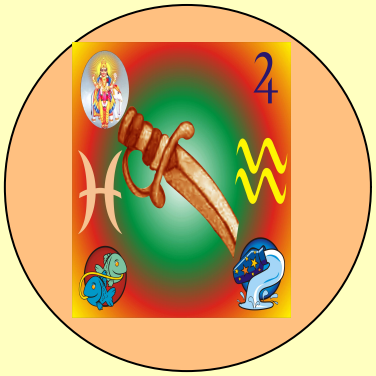

चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)

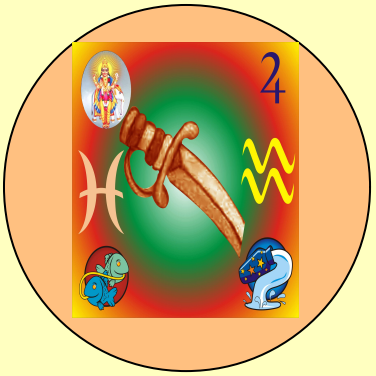

चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:30:31) : गुरू : 0 व 10 मा 13 दि	
ग्रह दशा	से ———— तक
गुरू	18:01:1975 - 30:11:1975
शनि	01:12:1975 - 30:11:1994
बुध	01:12:1994 - 30:11:2011
केतु	01:12:2011 - 30:11:2018
शुक्र	01:12:2018 - 30:11:2038
सूर्य	01:12:2038 - 30:11:2044
चन्द्र	01:12:2044 - 30:11:2054
मंगल	01:12:2054 - 30:11:2061
राहु	01:12:2061 - 30:11:2079

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:30:31) : गुरू : 13 व 2 मा 25 दि	
ग्रह दशा	से ———— तक
गुरू	02:11:1976 - 26:01:1990
शनि	27:01:1990 - 26:01:2009
बुध	27:01:2009 - 26:01:2026
केतु	27:01:2026 - 26:01:2033
शुक्र	27:01:2033 - 26:01:2053
सूर्य	27:01:2053 - 26:01:2059
चन्द्र	27:01:2059 - 26:01:2069
मंगल	27:01:2069 - 26:01:2076
राहु	27:01:2076 - 26:01:2094

भावी ब्यापारिक साझीदारों की कुण्डलियों में वर्तमान महादशा अधिपति (दोनो कुण्डलीयों में) अशुभ ग्रह नहीं हैं। यह महादशा अवधि के पूर्ण मिलान का सूचक है।

पूर्णांक : 14 प्राप्तांक : 14

ग्रहों की पारस्परिक स्थिति का विश्लेषण

भावी ब्यापारिक साझीदारों की कुण्डलीयों में कारक ग्रहों जैसे सूर्य, चन्द्रमा, और गुरू इत्यादि का साझीदारों की कुण्डलीयों में पारस्परिक स्थिति के आधार पर एक दूसरे के बीच के समझ और पारस्परिक सहयोग का मिलान और विश्लेषण।

ज्योतिष में सूर्य अच्छे भाग्य, धन–सम्पति, स्वास्थ्य, आत्मा और जीवन शक्ति का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में चन्द्रमा प्रजनन क्षमता, आयु, अच्छे स्वास्थ्य, जीवन में आगे बढ़ने की तीव्र जीजिविषा, सोचने की क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में गुरू साधारण तौर पर जीवन में मिलने वाली सफलता, वैवाहिक सुख, संतान और समृद्धि का कारक ग्रह है।

ग्रह	Sample B	Sample G	स्थिति	प्राप्तांक
सूर्य	मकर (चतुर्थ)	तुला (प्रथम) नीचस्थ	4/10	6
चन्द्र	मीन (षष्टम्)	कुम्भ (पंचम्)	2/12	0
गुरू	कुम्भ (पंचम्)	वृष (अष्टम्)	4/10	6

नोट : यदि कोई ग्रह उच्च का है तो ये दोष नज़रंदाज भी किया जा सकता है परन्तु अगर नीच का है तो दोष की मात्रा कई गुना बढ़ जाता है।

पूर्णांक : 18 प्राप्तांक : 12

मेलापन समग्र (सम्पूर्ण) – ब्यापारिक संबन्ध

कूट विवरण	Sample	Sample	पूर्णांक	प्राप्तांक
भाग–1 : ब्यापारिक साझीदारों के बीच मानसिक सांमजस्य				
चन्द्र राशि	मीन	कुम्भ	9	4.5
चन्द्र राश्याधिपति	गुरू	शनि	9	4.5
स्त्रीदीर्घ	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	9	0
	Total :	**(33.3)**	**27**	**09.0**
भाग–2 : ब्यापारिक साझीदारों के बीच में भौतिक और संसारिक सुख का				
दिन	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	9	0
महेन्द्र	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	9	0
वेध	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	9	9
	Total :	**(33.3)**	**27**	**09.0**
भाग–3 : विवाह के अन्य महत्वपूर्ण कारकों का मिलान				
मांगलिक दोष (प्रतिशत)	0	100	**14**	**0**
दशा चक्र (विंशोत्तरी)	शुक्र (01:12:2018)	बुध (27:01:2009)	**14**	**14**
ग्रहों के पारस्परिक संबंन्ध	सूर्य, चन्द्र, गुरू	सूर्य, चन्द्र, गुरू	**18**	**12**
	Total :	**(56.5)**	**46**	**26.0**

पूर्णांक	जरूरी	प्राप्तांक
100	40	44.0

कूट गणना के अनुसार (भाग–1) मानसिक सांमजस्य के स्तर पर दोनो ब्यापारिक साझीदारों के बीच तारतम्यता अनुपस्थित है। कूट गणना के अनुसार (भाग–2) भौतिक और संसारिक सुख के स्तर पर दोनो ब्यापारिक साझीदारों के बीच तारतम्यता अनुपस्थित है। हांलाकि ज्योतिष के सिद्धान्तो के आधार पर मिलान का कुल योग ब्यापारिक साझीदारी के योग्य है, परन्तु पीछे गणना किए 3 कारकों में से एक या अधिक में मिलान अनुपस्थित है। आपको किसी विद्वान ज्योतिषी से विवेचना करवा कर ही ब्यापारिक साझीदारी को स्थापित करना चाहिए।

मांगलिक दोष (स्वभाव) का मिलान

भावी दम्पति के कुण्डलीयों में मंगल के स्थिति के आधार पर दम्पति के बुनियादी स्वभाव (क्रोध, उग्रता आदि) का मेलापन और निष्कर्ष।

Sample B	Sample G
कुण्डली में मांगलिक दोष से संबंधित कोई भी योग नहीं है।	कुण्डली में मंगल लग्न और चन्द्रमा या शुक्र से पहले, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में है।
मंगल दशा (01:12:2054 से 01:12:2061 तक) उम्र (79.9 वर्ष से 86.9 वर्ष तक)	मंगल दशा (27:01:2069 से 27:01:2076 तक) उम्र (92.2 वर्ष से 99.2 वर्ष तक)
0%	60%
पूर्णांक :	10
प्राप्तांक :	0

भावी साझीदारों की कुण्डलियों में मांगलिक दोष की मात्रा का अन्तर 20 प्रतिशत से अधिक है। किसी विद्वान ज्योतिषी से सलाह के उपरान्त ये संबंध स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि मांगलिक दोष कुण्डली मिलान की पूरी प्रक्रिया का एक अंग है।

चन्द्र राशि (मानसिक/भावनात्मक) का मिलान

भावी दम्पति के कुण्डलीयों में राशि (चन्द्रराशि), राश्याधिपति और वश्य के आधार पर मनोवैज्ञानिक मिलान और निष्कर्ष।

Sample B	Sample G
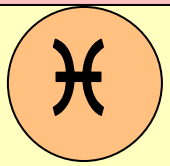	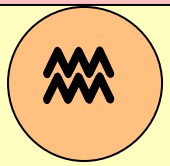
चन्द्र राशि : मीन	चन्द्र राशि : कुम्भ
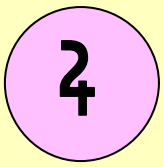	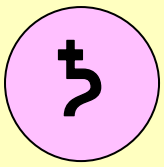
चन्द्र राश्याधिपति : गुरू	चन्द्र राश्याधिपति : शनि

चन्द्र राशि मिलान

दम्पति की कुण्डली में उपस्थित राशि कूट परिवार की उन्नति को सुनिश्चित करता है। दम्पति में सौहार्दपूर्ण संबंध बना रहता है। जबकि दम्पति की जन्म राशि प्रतिकूल अवस्था में स्थित होने पर धन की हानि, रोगादि में वृद्धि, कलह–क्लेश, मतभेद व लड़ाई–झगड़े, संबंध विच्छेद आदि की संभावना हो सकती है।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 2.5**

राश्याधिपति मिलान

दम्पति की कुण्डली में उपस्थित राश्याधिपति युगल दम्पति की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह दम्पति की व्यक्तिगत मानसिक अभिवृत्ति एवं उनके मध्य परस्पर स्नेह को भी दर्शाता है।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 2.5**

वश्य मिलान

दम्पति की कुण्डली में वश्य कूट की उपस्थिति उनके मध्य परस्पर प्रेम व लगाव को सुनिश्चित करता है। यह पारस्परिक आकर्षण में वृद्धि का सूचक है। यह दम्पति का एक दूसरे को अपने आकर्षण से नियंत्रित करने की शक्ति या एक दूसरे को अपने अधीन रखने की क्षमता को दर्शाता है।

पूर्णांक : 5 **प्राप्तांक : 0**

नक्षत्रों के आधार पर मिलान

Sample B	Sample G
	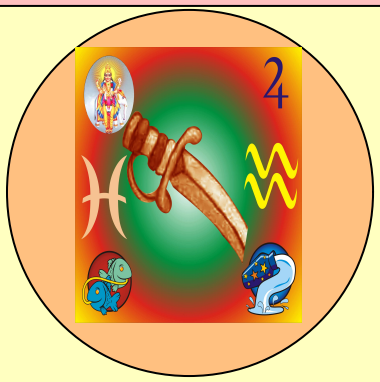
चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)	चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

वेध (बाधा / प्रतिरोध) मिलान

दम्पति की कुण्डली में वेध कूट की उपस्थिति दम्पत्ति के जीवन में आने वाली सभी प्रकार की विघ्न–बाधा, आघात, आक्रमण, यातना व वेध आदि को रोकता है एवं उनकी रक्षा करता है तथा एक सुख–शांतिपूर्ण व समृद्धशाली जीवन को सुनिश्चित करता है।

पूर्णांक : 7 **प्राप्तांक : 7**

दिन (मिज़ाज / ब्यवहार) मिलान

दम्पति की कुण्डली में उपस्थित दिन कूट यह सुनिश्चित करता है कि दम्पति स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे, उनका जीवन सुखमय होगा तथा जीवन की सभी सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे। दिन कूट की अनुपस्थिति में दम्पति के मध्य वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं, जो दिन–प्रतिदिन बढ़ सकते हैं, जिससे परस्पर विवाद व तकरार उत्पन्न हो सकता है तथा उनके मध्य परस्पर सहयोग की भावना का अभाव हो सकता है।

पूर्णांक : 7 **प्राप्तांक : 0**

स्त्री–दीर्घ (मनोवैज्ञानिक) मिलान

स्त्री दीर्घ– स्त्री दीर्घ कूट की उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है, कि दम्पति को अलगाव की स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा। दम्पति का संबंध दीर्घकालिक होगा, जिसमें सुदृढ़ता, घनिष्ठता व एकजुटता सदैव बनी रहेगी। दम्पत्ति के जीवन में उन्नति होगी।

पूर्णांक : 7 **प्राप्तांक : 0**

नक्षत्रों के आधार पर मिलान

Sample B	Sample G
	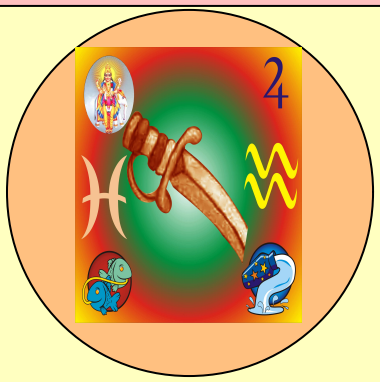
चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)	चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

गण मिलान

साझीदारों की कुण्डली में उपस्थित गण कूट यह सुनिश्चित करता है कि उनका जीवन परस्पर अनुकूल होगा तथा उनके विचार, मिजाज और गुणों में समरूपता होगी। गण कूट से साझीदारों की चारित्रिक विशेषताओं का विचार किया जाता है।

पूर्णांक : 11 प्राप्तांक : 11

नाड़ी मिलान

साझीदारों की कुण्डली में नाड़ी कूट की उपस्थिति उनकी दीर्घायु, प्रसन्नता व स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है। यह साझीदारों द्वारा आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर कार्य करने की योग्यता को दर्शाता है। नाड़ी कूट उनकी एकता पर पड़ने वाले प्रभाव को भी दर्शाता है।

पूर्णांक : 11 प्राप्तांक : 0

ग्रहों की अशुभता का मिलान (कर्म और चुनौतियाँ)

भावी साझीदारों की कुण्डली में सभी अशुभ ग्रहों के अशुभता के कुल योग के आधार पर शुभ/अशुभ कर्मो का मिलान और विश्लेषण

Sample B

ग्रह (राशि में)	लग्न से गणना	चन्द्र से गणना	शुक्र से गणना
सूर्य (मकर)	चतुर्थ, अधिशत्रु प्राप्तांक : 15	एकादश प्राप्तांक : 0	प्रथम, अधिशत्रु प्राप्तांक : 60
शनि (मिथुन)	नवम् प्राप्तांक : 0	चतुर्थ प्राप्तांक : 0	षष्टम् प्राप्तांक : 0
राहु (वृश्चिक)	द्वितीय, नीचस्थ प्राप्तांक : 32	नवम् प्राप्तांक : 0	एकादश प्राप्तांक : 0
केतु (वृष)	अष्टम्, नीचस्थ प्राप्तांक : 128	तृतीय प्राप्तांक : 0	पंचम् प्राप्तांक : 0
मंगल (धनु)	तृतीय प्राप्तांक : 0	दशम् प्राप्तांक : 0	द्वादश, अधिमित्र प्राप्तांक : 9
योग :	175	0	69

Sample G

ग्रह (राशि में)	लग्न से गणना	चन्द्र से गणना	शुक्र से गणना
सूर्य (तुला)	प्रथम, नीचस्थ प्राप्तांक : 64	नवम् प्राप्तांक : 0	द्वादश, नीचस्थ प्राप्तांक : 16
शनि (कर्क)	दशम् प्राप्तांक : 0	षष्टम् प्राप्तांक : 0	नवम् प्राप्तांक : 0
राहु (तुला)	प्रथम, अधिमित्र प्राप्तांक : 24	नवम् प्राप्तांक : 0	द्वादश, अधिमित्र प्राप्तांक : 6
केतु (मेष)	सप्तम् प्राप्तांक : 0	तृतीय प्राप्तांक : 0	षष्टम् प्राप्तांक : 0
मंगल (तुला)	प्रथम, मित्र प्राप्तांक : 48	नवम् प्राप्तांक : 0	द्वादश, मित्र प्राप्तांक : 12
योग :	136	0	34

Total for - Sample B : 244

Total for - Sample G : 170

पूर्णांक : 12 प्राप्तांक : 6

ग्रहदशा मिलान

भावी दम्पति की कुण्डली में मिलान के समय में प्रभावी दशा और दशापति के आधार पर भविष्य में दाम्पत्य जीवन में आने वाली बाधाओं का विश्लेषण

Sample B	Sample G

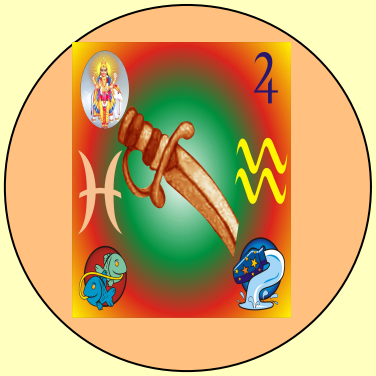

चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)

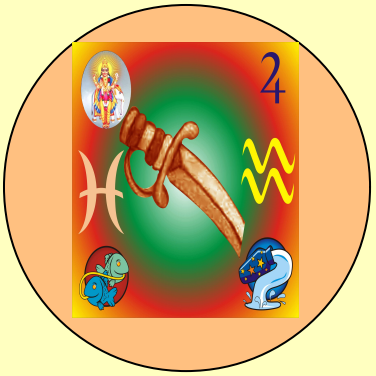

चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:30:31) : गुरू : 0 व 10 मा 13 दि	
ग्रह दशा	से ———— तक
गुरू	18:01:1975 - 30:11:1975
शनि	01:12:1975 - 30:11:1994
बुध	01:12:1994 - 30:11:2011
केतु	01:12:2011 - 30:11:2018
शुक्र	01:12:2018 - 30:11:2038
सूर्य	01:12:2038 - 30:11:2044
चन्द्र	01:12:2044 - 30:11:2054
मंगल	01:12:2054 - 30:11:2061
राहु	01:12:2061 - 30:11:2079

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:30:31) : गुरू : 13 व 2 मा 25 दि	
ग्रह दशा	से ———— तक
गुरू	02:11:1976 - 26:01:1990
शनि	27:01:1990 - 26:01:2009
बुध	27:01:2009 - 26:01:2026
केतु	27:01:2026 - 26:01:2033
शुक्र	27:01:2033 - 26:01:2053
सूर्य	27:01:2053 - 26:01:2059
चन्द्र	27:01:2059 - 26:01:2069
मंगल	27:01:2069 - 26:01:2076
राहु	27:01:2076 - 26:01:2094

भावी दम्पति की कुण्डली में वर्तमान महादशाओं के आरम्भ की अवधि में 1 वर्ष से अधिक का अन्तर है और दोनों कुण्डलियों में वर्तमान महादशा अधिपति एक दूसरे से अशुभ स्थानों में (2/12 अथवा 6/8) स्थित नहीं है। यह महादशा अवधि के पूर्ण मिलान का सूचक है।

पूर्णांक : 10 प्राप्तांक : 10

ग्रहों की पारस्परिक स्थिति का विश्लेषण

भावी साझीदारों की कुण्डलीयों में कारक ग्रहों जैसे सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, गुरू और शुक्र इत्यादि का साझीदारों की कुण्डलीयों में पारस्परिक स्थिति के आधार पर एक दूसरे के बीच के समझ और पारस्परिक सहयोग का मिलान और विश्लेषण।

ज्योतिष में सूर्य अच्छे भाग्य, धन–सम्पति, स्वास्थ्य, आत्मा और जीवन शक्ति का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में चन्द्रमा प्रजनन क्षमता, आयु, अच्छे स्वास्थ्य, जीवन में आगे बढ़ने की तीव्र जीजिविषा, सोचने की क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में गुरू साधारण तौर पर जीवन में मिलने वाली सफलता, वैवाहिक सुख, संतान और समृद्धि का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में शुक्र प्रेम संबंध, मनोभाव और जीवन साथी का कारक ग्रह है।

ग्रह	Sample B	Sample G	स्थिति	प्राप्तांक
सूर्य	मकर (चतुर्थ)	तुला (प्रथम) नीचस्थ	4/10	2.5
चन्द्र	मीन (षष्टम्)	कुम्भ (पंचम्)	2/12	0
गुरू	कुम्भ (पंचम्)	वृष (अष्टम्)	4/10	2.5
शुक्र	मकर (चतुर्थ)	वृश्चिक (द्वितीय)	3/11	2.5

नोट : यदि कोई ग्रह उच्च का है तो ये दोष नज़रंदाज भी किया जा सकता है परन्तु अगर नीच का है तो दोष की मात्रा कई गुना बढ़ जाता है।

पूर्णांक : 10 प्राप्तांक : 7.5

मेलापन समग्र (सम्पूर्ण) – समलिंगी

कूट विवरण	Sample	Sample	पूर्णांक	प्राप्तांक
भाग–1 : भावी दम्पतियों के बीच मानसिक सांमजस्य				
चन्द्र राशि	मीन	कुम्भ	5	2.5
चन्द्र राश्याधिपति	गुरू	शनि	5	2.5
वश्य	मीन	कुम्भ	5	0
स्त्रीदीर्घ	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	7	0
	Total :	**(22.7)**	**22**	**05.0**
भाग–2 : भावी दम्पतियों के बीच में भौतिक और संसारिक सुख का अनुभव				
दिन	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	7	0
वेध	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	7	7
	Total :	**(50.0)**	**14**	**07.0**
भाग–3 : आध्यात्मिक स्तर पर भावी दम्पतियों के बीच तारतम्यता				
नाड़ी	वात	वात	11	0
गण	मनुष्य	मनुष्य	11	11
	Total :	**(50.0)**	**22**	**11.0**
भाग–4 : विवाह के अन्य महत्वपूर्ण कारकों का मिलान				
मांगलिक दोष (प्रतिशत)	0	60	**10**	**0**
अशुभ ग्रहों के दोष	244	170	**12**	**6**
दशा चक्र (विंशोत्तरी)	शुक्र (01:12:2018)	बुध (27:01:2009)	**10**	**10**
ग्रहों के पारस्परिक संबंन्ध	सूर्य, चन्द्र, गुरू, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, गुरू, शुक्र	**10**	**7.5**
	Total :	**(56.0)**	**42**	**23.5**

पूर्णांक	जरूरी	प्राप्तांक
100	45	46.5

कूट गणना के अनुसार (भाग–1) मानसिक सांमजस्य के स्तर पर दोनो साझीदारों के बीच तारतम्यता अनुपस्थित है। हांलाकि ज्योतिष के सिद्धान्तो के आधार पर गुण मिलान का कुल योग साझेदारी के योग्य है, परन्तु पीछे गणना किए 4 कारकों में से एक या अधिक में मिलान अनुपस्थित है। आपको किसी विद्वान ज्योतिषी से विवेचना करवा कर ही ये साझेदारी स्थापित करना चाहिए।

चन्द्र राशि (मानसिक/भावनात्मक) का मिलान

नियोक्ता/कर्मचारी के कुण्डलीयों में राशि (चन्द्रराशि) और वश्य के आधार पर मनोवैज्ञानिक मिलान और निष्कर्ष।

Sample B	Sample G
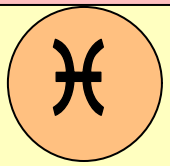	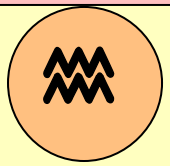
चन्द्र राशि : मीन	चन्द्र राशि : कुम्भ
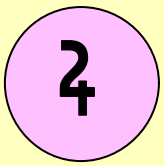	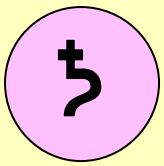
चन्द्र राश्याधिपति : गुरू	चन्द्र राश्याधिपति : शनि

चन्द्र राशि मिलान

नियोक्ता/कर्मचारी की कुण्डली में उपस्थित राशि कूट कार्यस्थल की सौहार्दता को सुनिश्चित करता है। नियोक्ता/कर्मचारी में सौहार्दपूर्ण संबंध बना रहता है। जबकि नियोक्ता/कर्मचारी की जन्म राशि प्रतिकूल अवस्था में स्थित होने पर कलह–क्लेश, मतभेद व लड़ाई–झगड़े, संबंध विच्छेद आदि की संभावना हो सकती है।

पूर्णांक : 12 **प्राप्तांक : 6**

वश्य मिलान

नियोक्ता/कर्मचारी की कुण्डली में वश्य कूट की उपस्थिति उनके मध्य परस्पर प्रेम व लगाव को सुनिश्चित करता है।यह नियोक्ता/कर्मचारी का एक दूसरे को अपने आकर्षण से नियंत्रित करने की शक्ति या एक दूसरे को अपने अधीन रखने की क्षमता को दर्शाता है।

पूर्णांक : 12 **प्राप्तांक : 0**

नक्षत्रों के आधार पर मिलान

Sample B	Sample G
	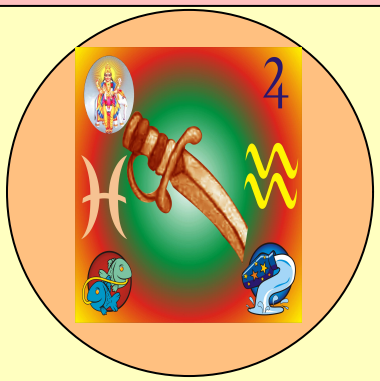
चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (4)	चन्द्र नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद चरन (1)

वेध (बाधा / प्रतिरोध) मिलान

नियोक्ता / कर्मचारी की कुण्डली में वेध कूट की उपस्थिति नियोक्ता / कर्मचारी के जीवन में आने वाली सभी प्रकार की विघ्न–बाधा, आघात, आक्रमण, यातना व वेध आदि को रोकता है एवं उनकी रक्षा करता है तथा एक सुख–शांतिपूर्ण व समृद्धशाली ब्यापारिक जीवन को सुनिश्चित करता है।

पूर्णांक : 13 **प्राप्तांक : 13**

दिन (मिज़ाज / ब्यवहार) मिलान

नियोक्ता / कर्मचारी की कुण्डली में उपस्थित दिन कूट यह सुनिश्चित करता है कि वो स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे, उनकी साझेदारी सुखमय होगी तथा जीवन की सभी सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे। दिन कूट की अनुपस्थिति में नियोक्ता / कर्मचारी के मध्य वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं, जो दिन–प्रतिदिन बढ़ सकते हैं, जिससे परस्पर विवाद व तकरार उत्पन्न हो सकता है तथा उनके मध्य परस्पर सहयोग की भावना का अभाव हो सकता है।

पूर्णांक : 13 **प्राप्तांक : 0**

स्त्री–दीर्घ (मनोवैज्ञानिक) मिलान

स्त्री दीर्घ कूट की उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है, कि नियोक्ता / कर्मचारी को अलगाव की स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा। उनका संबंध दीर्घकालिक होगा, जिसमें सुदृढ़ता, घनिष्ठता व एकजुटता सदैव बनी रहेगी। कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी।

पूर्णांक : 13 **प्राप्तांक : 0**

महेन्द्र (ममत्व / अपनापन) मिलान

नियोक्ता / कर्मचारी की कुण्डली में उपस्थित महेन्द्र कूट यह सुनिश्चित करता है कि नियोक्ता / कर्मचारी के मध्य दीर्घकालिक संबंध होगा।

पूर्णांक : 13 **प्राप्तांक : 0**

ग्रहों की पारस्परिक स्थिति का विश्लेषण

भावी नियोक्ता/कर्मचारी की कुण्डलीयों में कारक ग्रहों जैसे सूर्य, चन्द्रमा और गुरू इत्यादि का नियोक्ता/कर्मचारी की कुण्डलीयों में पारस्परिक स्थिति के आधार पर एक दूसरे के बीच के समझ और पारस्परिक सहयोग का मिलान और विश्लेषण।

ज्योतिष में सूर्य अच्छे भाग्य, धन–सम्पति, स्वास्थ्य, आत्मा और जीवन शक्ति का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में चन्द्रमा प्रजनन क्षमता, आयु, अच्छे स्वास्थ्य, जीवन में आगे बढ़ने की तीव्र जीजिविषा, सोचने की क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में गुरू साधारण तौर पर जीवन में मिलने वाली सफलता, वैवाहिक सुख, संतान और समृद्धि का कारक ग्रह है।

ज्योतिष में शुक्र प्रेम संबंध, मनोभाव और जीवन साथी का कारक ग्रह है।

ग्रह	Sample B	Sample G	स्थिति	प्राप्तांक
सूर्य	मकर (चतुर्थ)	तुला (प्रथम) नीचस्थ	4/10	8
चन्द्र	मीन (षष्टम्)	कुम्भ (पंचम्)	2/12	0
गुरू	कुम्भ (पंचम्)	वृष (अष्टम्)	4/10	8

नोट : यदि कोई ग्रह उच्च का है तो ये दोष नज़रंदाज भी किया जा सकता है परन्तु अगर नीच का है तो दोष की मात्रा कई गुना बढ़ जाता है।

पूर्णांक : 24 प्राप्तांक : 16

मेलापन समग्र (सम्पूर्ण) – नियोक्ता/कर्मचारी

कूट विवरण	Sample	Sample	पूर्णांक	प्राप्तांक
भाग–1 : नियोक्ता/कर्मचारी के बीच मानसिक सांमजस्य				
चन्द्र राशि	मीन	कुम्भ	12	6
वश्य	मीन	कुम्भ	12	0
स्त्रीदीर्घ	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	13	0
	Total :	**(16.2)**	**37**	**06.0**
भाग–2 : नियोक्ता/कर्मचारी के बीच में भौतिक और संसारिक सुख का				
दिन	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	13	0
महेन्द्र	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	13	0
वेध	पूर्वाभाद्रपद (25)–4	पूर्वाभाद्रपद (25)–1	13	13
	Total :	**(33.3)**	**39**	**13.0**
भाग–3 : विवाह के अन्य महत्वपूर्ण कारकों का मिलान				
ग्रहों के पारस्परिक संबंन्ध	सूर्य, चन्द्र, गुरू	सूर्य, चन्द्र, गुरू	**24**	**16**
	Total :	**(66.7)**	**24**	**16.0**

पूर्णांक	जरूरी	प्राप्तांक
100	60	35.0

कूट गणना के अनुसार (भाग–1) मानसिक सांमजस्य के स्तर पर नियोक्ता/कर्मचारी के बीच तारतम्यता अनुपस्थित है। कूट गणना के अनुसार (भाग–2) आध्यात्मिक सांमजस्य के स्तर पर नियोक्ता/कर्मचारी के बीच तारतम्यता अनुपस्थित है। ज्योतिष के सिद्धान्तो के आधार पर मिलान का कुल योग नियोक्ता/कर्मचारी संबंन्ध के योग्य नहीं है। आपको किसी विद्वान ज्योतिषी से विवेचना करवा कर ही नियोक्ता/कर्मचारी के इस संबंन्ध को स्थापित करना चाहिए।